श्रीः ।

अवन्तिकाचार्य्यवराहमिहिरकृत-

मयूरचित्रकम् ।

(ज्योतिषग्रंथ)

श्रीमान्मश्रुतज्ञाग्रगण्यज्योतिर्विदपण्डित
नारायणप्रसाद् मुकुन्दराम
चासपरेली तथा करीमपुरनिवासी
कृत भाषाटीकासहित.

इसको

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

अपने "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें
मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने मुद्रितकरके लिये
छापकर प्रकाशित किया.

संवत् १९८०, शके १८४५.

कल्याण-मुंबई.

प्रस्तावना।

उस पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द स्वरूप जगदीश्वरको अनेक नमस्कार हैं कि, जिसने अपनी अनुपम कृपासे वेदादि सत्य शास्त्रोंका उपदेश किया है कि जिसको पढ़कर मनुष्य समस्त पदार्थोंको यथावत् जान सका है, तत्पश्चात् पूर्वज महर्षियों तथा आचार्योंकोभी अनेक धन्यवाद हैं, कि जिन्होंने वेदादि सत्य शास्त्रोंको मथकर ज्योतिषशास्त्रको प्रकट किया, जिसके द्वारा ज्योतिर्विद लोग भूत, भविष्य, वर्तमान कहनेमें समर्थ होते हैं. विशेष विचार करनेसे ज्ञात होता है कि ज्योतिषशास्त्रही विद्वानकी प्रतिष्ठादिका कारण है. इसीको पढ़के पूर्व विद्वान त्रिकालज्ञ और दैवज्ञ कहलाते थे. कालान्तरमें श्रीसूर्य्यांशावतार अवन्तिकाचार्य्य वराहमिहिरजीने ज्योतिषशास्त्रमें अपनी निपुणता तथा बहुज्ञताके कारण अन्यान्य आचार्य्योंकी सम्मति संग्रह करके बृहत्संहिता, बृहज्जातक,

मयूरचित्रक आदि अनेक ग्रन्थ रचना किये जिससे पाठक गण थोडेही परिश्रमसे बहुत आचार्य्योंकी संमतिमें अभिज्ञ हो जावें, ये ग्रन्थ संस्कृतमें हैं परन्तु हालमें वर्तमान समयकी ऐसी दशा हो गई कि, संस्कृतमें अल्प बोध होनेके कारण साधारण श्रेणीके पण्डितोंकी समझमें आना दुर्लभ जानकर आधुनिक पण्डितोंने ग्रन्थोंका भाषान्तर करना प्रारम्भ किया है और वे भाषान्तर यत्र तत्र मुद्रित होते चले जाते हैं. वराहमिहिराचार्य्यकृत ग्रन्थोंमेंसे बृहत्संहिता, बृहज्जातक, लघुजातक इन ग्रन्थोंका भाषान्तर हो चुका है अब इस मयूरचित्रक नामक पुस्तकका भाषान्तर हमने श्रीसेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजी जो प्राचीन नवीन पुस्तकोंके प्रकाश करनेमें कटिबद्ध हैं उनकी प्रेरणासे सरल भाषामें किया है और इसका सब हक उक्त सेठजीको दिया है, इस ग्रन्थमें प्रत्येक वस्तुके समर्घ (सस्ते) महर्घ (महँगे) का विचार व प्रत्येक मासमें वर्षा आदिका सम्पूर्ण वृत्तान्त जाना जाता है, किन्तु इस छोटेसेही

ग्रन्थके आधारसे सम्वत्सर (वर्ष पर्य्यन्त) का सब हाल सहजहीमें पंडितजन कह सक्ता है, ऐसा यह परमोत्तम ग्रन्थ सबही पंडितोंको एक २ प्रति अपने पास अवश्य रखना चाहिये.



रामबाणनिधीन्द्वब्दे माघे मासि सिते दले ।
दशम्यां भृगुवारे च भाषारम्भः कृतो मया॥ १ ॥

समस्तपण्डितोंका हितैषी पण्डित—
नारायणप्रसाद मुकुन्दरामजी संस्कृतपुस्तका-
लयाध्यक्ष—बांसबरेली और
लखीमपुर (अवध)

॥ श्रीः ॥

अथ मयूरचित्रकस्य विषयानुक्रमणिका ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण–मुंबई.

॥ श्रीः ॥

भाषाटीकासहितं

मयूरचित्रकम्।

तत्रादौ त्रिविधोत्पाताः ।

उदयास्तमनं केतोर्गणितेन प्रशस्यते ॥
दिव्यभौमान्तरिक्षाश्च उत्पातास्त्रिविधा मताः ॥ १ ॥

भाषाकारकृतमंगलाचरणम् ।

प्रणम्य भास्करं देवं श्रीनारायणशर्मणा ॥
भाषा मयूरचित्रस्य ग्रन्थस्य क्रियतेऽधुना ॥

श्रीसूर्यनारायण जो प्रत्यक्ष देव तिसको प्रणाम करके श्रीनारायणप्रसादशर्मा करके मयूरचित्रकनामक ज्योतिष ग्रन्थकी भाषा सरल रीतिसे की जाती है ॥

केतुका उदय और अस्त गणित करके जाना जाता है और दिव्य, भौम, अन्तरिक्ष यह भेद करके उत्पात तीन प्रकारके हैं, ऐसा अनेक आचार्योंका मत है ॥ १ ॥

तेषामप्यनेकभेदाः ।

एकोत्तरशतं त्वेके सहस्रमपरे विदुः ॥
एकोपि बहुधा भाति प्राह वै नारदो मुनिः॥२॥

तहां इन तीनोंके कोई एक सौ एक भेद कहते हैं और दूसरे आचार्य्य एक हजार भेद वर्णन करते हैं, एकभी बहुत प्रकारका होता है ऐसा नारदमुनिने कहाहै ॥ २ ॥

अथ केतुचारफलम् ।

यावन्त्यहानि दृश्यन्ते तावन्मासैः फलं भवेत् ॥
मासे मासे च विज्ञेयमित्यूचुर्मुनयोपरे ॥ ३ ॥

केतुका तारा जितने दिनोंतक आकाशमें दीख पडे उतने महीनोंतक केतुका फल होता है, अन्यमुनि कहते हैं, कि महीने महीनेमें फल जानना अर्थात् जिस महीनेमें उदय होय उसीमें उसका फल जानना ॥ ३ ॥

अथ केतुस्वरूपकथनं फलसहितं च ।

सुस्निग्धो रुचिरः सूक्ष्मो ऋजुः शुक्लः शुभप्रदः ॥
विपरीतोऽशुभः केतुस्त्रिशिखेन्द्रधनुःप्रभः ॥४॥

सुन्दर चिकना, मनोहर, छोटा, सीधा, श्वेतवर्ण ऐसा केतु शुभ देनेवाला होता है, इससे विपरीत तीन शिखावाला इन्द्रधनुषके आकार केतु अशुभ जानना ॥ ४ ॥

मुक्ताकनकसंकाशाः पंचविंशतिसंख्यकाः ॥
प्राक्परस्यां च ते दृष्टाः सूर्यपुत्रा भयप्रदाः॥५॥

मोती और मोतीकीसी कान्तिवाले पचीस तारे चोटीवाले सूर्यके पुत्र हैं, ये पूर्व तथा पश्चिममें दीख पडें तो भयदायक जानने ॥ ५ ॥

बहुवर्णाग्निसंकाशा सशिखा पंचविंशतिः ॥
आग्नेय्यां दिशि संदृष्टा वह्निपुत्रा भयप्रदाः॥६॥

अनेक रंगके अग्निसमान कांतिवाले चोटीदार पचीस तारे अग्निके पुत्र हैं, वे अग्निदिशामें दीख पडें तो भयके देनेवाले होते हैं ॥ ६ ॥

याम्याशासंस्थिताः कृष्णा ऋक्षा वक्रशिखास्तथा ।
यावन्तो वै मृत्युसुताः प्रजाक्षयकराः स्मृताः ॥७॥

दक्षिणदिशामें स्थित कृष्णवर्ण (काले रंग) के तथा

टेढी चोटीवाले पचीस नक्षत्र यमके पुत्र हैं वे प्रजाके क्षय करनेवाले होते हैं ॥ ७ ॥

वृत्ताकाराश्च विशिखा जलतैलसमप्रभाः ॥
द्वाविंशद्भूमिपुत्राश्च दुर्भिक्षायैशादिग्गताः ॥ ८ ॥

गोल आकार और जलमें डाले भये तेलके समान कान्तिवाले चोटीदार बाईस तारे पृथिवीके पुत्र हैं वे ईशान् दिशामें दीख पडे तो दुर्भिक्ष करनेवाले जानने ॥ ८ ॥

हिमरश्मिहिरण्याभास्त्रयश्चंद्रसुताः स्मृताः ॥
उत्तरस्यां यदा दृष्टास्तदा शुभफलप्रदाः ॥ ९ ॥

चन्द्रमा और सुवर्णकीसी कान्तिवाले तीन नक्षत्र चन्द्रमाके पुत्र हैं जो वे उत्तरदिशामें दीख पडें तो शुभ फल देनेवाले जानने ॥ ९ ॥

क्रूरस्त्रिवर्णस्त्रिशिख एको ब्रह्मसुतः स्मृतः ॥
सर्वास्वाशासु संदृष्टो ब्रह्मदण्डक्षयावहः ॥ १० ॥

क्रूर (बहुत चमकीला) और तीन रंगवाला तथा तीनही शिखा (चोटी) हैं जिसके ऐसा एक तारा ब्रह्माका

पुत्र है वह सब दिशाओंमेंसे किसी दिशामें दीख पडे तो ब्रह्मदंडसे क्षयकारी होता है ऐसा जानना ॥ १० ॥

विसर्पाख्याः शुक्रसुताः सुस्निग्धाः श्वेततारकाः ॥
चतुरशीतिसंख्याकाः पुरा दृष्टा भयप्रदाः ॥ ११ ॥

सुन्दर चिकने श्वेत (सपेद) वर्णवाले, विसर्प नामके चौरासी नक्षत्र पूर्वदिशामें दीख पडें तो भयके देनेवाले जानने ॥ ११ ॥

सुस्निग्धा द्विशिखाश्चैव षष्टिश्च कनकाह्वयाः ॥
शनैश्चरसुता घोरा दुःखदाः केतुतारकाः ॥ १२ ॥

बहुत चिकने और दो चोटीवाले, सुवर्णकी कान्तिसमान कनकनामके साठ तारे शनैश्चरके पुत्र हैं, ये केतुतारे घोर और दुःखके देनेवाले हैं ॥ १२ ॥

एकतारा महास्वल्पाः शेषाः श्वेता महाप्रभाः ॥
सशिखाश्च गुरोः पुत्राः प्रायशो दक्षिणाश्रयाः॥१३॥
नामतोऽधिकचा घोरा पष्टिपंचाधिकाः स्मृताः ॥
सौम्यपुत्रास्तारकाख्याः सर्वदिक्प्रभवाश्च ते ॥१४॥

नाऽतिव्यक्ताश्च रूक्षाश्च श्वेतरूपा भयावहाः ॥
एकाधिकाश्च पंचाशत्केतवः परिकीर्तिताः ॥ १५ ॥

एक तारा बहुत छोटा जिनका श्वेतवर्ण बहुत चमकीले और चोटीवाले बृहस्पतिके पुत्र दक्षिण दिशामें रहनेवाले ॥ १३ ॥ अधिकचनामके पैंसठ तारे घोर भयकारी हैं और बुधके पुत्र तारकनामके सम्पूर्ण दिशाओंमें प्रकाश होनेवाले ॥ १४ ॥ मन्दप्रकाशक और रूखे श्वेत वर्ण भयके देनेहारे इक्यावन केतुके तारे पूर्वाचार्य्योंने कहेहैं॥

षष्टिः कुजात्मजाः रक्ता कौंकुमाः सौम्यादिग्गजाः ॥
त्रिशिखाश्च त्रितारा‌श्च महापापफलप्रदाः ॥ १६ ॥

रक्तवर्ण तथा केसरके रंगके साठ नक्षत्र मंगलके पुत्र हैं, वे तीन शिखावाले एक एकके तीन तीन दीख पडते हैं ऐसे तारे उत्तर दिशामें दीखे हुए महा अशुभ फलके देनेवाले जानने ॥ १६ ॥

राहुपुत्रास्त्रयस्त्रिंशत्ख्यातास्तमसकीलकाः ॥
चन्द्राऽर्कमण्डलस्थैते लोकानां कष्टदायकाः ॥ १७॥

तेंतीस केतुतारे राहुके पुत्र तमसकीलक नामके चन्द्रमंडल और सूर्यमण्डलमें निवास करते हैं, यह दीखे हुए तारे लोकको कष्ट देनेवाले होते हैं ॥ १७ ॥

नानावर्णाग्निपुत्राश्च किरन्तोऽग्निद्विचूडिनः ॥
विंशोत्तरशतं विश्वरूपा वह्निभयप्रदाः ॥ १८ ॥

अनेक रंगके अग्निको वर्षानेवाले दो दो चोटीदार, विश्वरूपनामके एक सौ बीस तारे अग्निके पुत्र हैं ऐसे देखे गये तारे भयके देनेवाले होते हैं ॥ १८ ॥

अरुणाख्या वायुपुत्रा वर्णतः श्यामलोहिताः ॥
वितारश्चामरप्रख्या भयदाः सप्तसप्ततिः ॥ १९ ॥

अरुणनामके श्यामलोहितवर्ण अर्थात् काले और लाल रंगके, चमरके आकार सतहत्तर तारे वायुके पुत्र हैं सो दीख पडें तो भयके देनेवाले जानने ॥ १९ ॥

प्रजापतिसुताश्चाष्टौ तारामंडलवर्तिनः ॥
तारापुंजप्रतीकाशा गणका भयदायिनः ॥ २० ॥

तारा (नक्षत्र) मंडलमें रहनेवाले, नक्षत्रोंके गुच्छा-

के समान गणकनाम आठ तारे प्रजापतिके पुत्र हैं वे भयदायक जानने ॥ २० ॥

द्वे शते चैव चत्वारः साशिखाः श्वेतरश्मयः ॥
चतुरस्रा ब्रह्मपुत्रा महाभयकरा मताः ॥ २१ ॥

दो सौ चार तारे चोटीवाले श्वेत किरण जि।ः ी और चौकोन वे ब्रह्माके पुत्र महाभय करनेवाले हैं ॥ २१ ॥

वंशगुल्मसमाः प्रोक्ता द्वाविंशदरुणात्मजाः ॥
शशिप्रभाश्च काकाख्याः केतवः कष्टदा मताः ॥२२

वांसोंके गुच्छोंके सदृश बाईस तारे चन्द्रमाकीसी कान्तिवाले काकनामके वरुणके पुत्र हैं सो आकाशमें दीख पडें तो यह केतुतारे कष्टके देनेवाले जानने ॥ २२ ॥

कालपुत्राः कबन्धाख्याः कबन्धसदृशारुणाः ॥
षण्णवतिश्च भयदा हिमरश्मिसमप्रभाः ॥ २३ ॥

कबन्धनामके विना शिरवाले नराकार रक्तवर्ण चन्द्रमाकीसी कांतिवाले छयानव तारे कालके पुत्र हैं दीख पड़ें तो भयके देनेवाले होते हैं ॥ २३ ॥

विदिक्पुत्रास्त्वेकतारा विदिक्षु च समाश्रिताः ॥
नवसंख्याश्च विपुला महाभयनिवेदनाः ॥ २४ ॥

एकही समान विदिशाओंमें रहनेवाले बडे बडे नव नक्षत्र विदिशाके पुत्र हैं वे महाभयके देनेवाले होतेहैं २४ ॥

अथ धूम्रकेतूदयफलम् ।

उत्तरस्यां महास्थूलो निर्मलश्चापरोदयी ॥
दृष्टः करोति मरणं पश्चादन्नसमृद्धिकृत् ॥ २५ ॥

उत्तरदिशामें बडा मोटा निर्मल कांतिवाला एक तारा उदय होनेसे लोकमें मृत्यु करनेवाला होता है, पश्चात् अन्नकी वृद्धि करता है ॥ २५ ॥

अस्ति केतुः श्वेतचिह्नः कर्कशः क्षुधयावहः ॥
दृष्टः प्राच्यां च शस्त्राख्यस्तादृक् स्निग्धश्च पापदः ॥

श्वेत (सफेद) चिह्नका चोटीवाला शस्त्रनाम जो केतु तारा है सो पूर्वदिशामें दीख पडे तो क्षुधासे भय देनेवाला होता है, यदि वही स्निग्ध (चिकना) होवे तो पापका देनेवाला जानना ॥ २६ ॥

कपालाख्यो धूम्रशिखो दृष्टः सर्वजलापहः ॥
प्राग्व्योमार्द्धविहारी स्यात्तथा क्षुन्मृत्युकारकः ॥२७॥

कपालनामक तारा जो धुआंके समान चोटीवाला पूर्वदिशामें आधे आकाशतक फैला हुआ होता है, वह दीख पडे तो सम्पूर्ण जलको नाश करनेवाला अर्थात् अवर्षण करनेवाला तथा क्षुधा और मृत्युका करनेवाला होता है, बडा भारी काल पडे ऐसा जानना ॥ २७ ॥

प्रागग्निमार्गः स्थूलाग्रो दृष्टः स्यादरुणप्रभः ॥
व्योमत्रिभागगामी च रौद्रः क्षुद्भयकारकः ॥ २८ ॥

पूर्व और अग्निदिशामें फैला हुआ लाल रंगका आगेसे मोटा एक भयानक तारा दीख पडे तो वह क्षुधासे भयका करनेवाला अर्थात् महादुर्भिक्ष करनेवाला होताहै ॥ २८ ॥

पश्चिमाशास्थितो यस्तच्छिखायाम्याग्रसंस्थितः ॥
यथा यथोदयं गच्छेत्तथा दैर्घ्यं प्रयात्यसौ ॥ २९ ॥
संस्पृशन्वै मुनीन्सप्त ध्रुवं चाभिजितं तथा ॥
व्योमार्द्धमात्रं भित्त्वा वै याम्येनास्तं प्रयाति च ३०॥

पश्चिमदिशामें स्थित जो चोटीवाला दक्षिणकी ओरके अग्रभाग जिसका सो जैसे जैसे उदय होता जावे तैसे तैसे उसकी चोटी बढती जाती है ॥ २९ ॥ और सप्तऋषि, ध्रुव तथा अभिजित् इन नक्षत्रोंको स्पर्श करता हुआ आधे आकाशतक फैलकर दक्षिणदिशामें अस्त हो जाता है ॥ ३० ॥

आप्रयागादवन्तिं च पुष्करारण्यमेव च ॥
मध्यदेशमुदग्भागं देवकाख्यं तथैव च ॥ ३१ ॥
धवलाख्यो निहन्त्याशु केतुर्दुःखभयप्रदः ॥
देशेष्वन्येषु दुर्भिक्षं दशमासावधि स्मृतम् ॥ ३२॥

यह देवक तथा धवल नामका तारा प्रयागसे लेके पुष्करवन तथा मध्यदेशके उत्तरभागसे दक्षिण उज्जैन नगरीतकके अन्तर्गत जो देश हैं ॥ ३१ ॥ उनको यह केतुतारा शीघ्र नाश करता और दुःख भयको देनेवाला है, अन्यदेशोंमें दश महीनेपर्यन्त दुर्भिक्षको करनेवाला जानना ३२॥

धूम्राकारा शिखा यस्य कृत्तिकायां समाश्रिता ॥

दृश्यते रश्मिकेतुः स्यात्सप्ताहानि शुभप्रदः ॥ ३३॥

धुआके आकार चोटी जिसकी कृत्तिकानक्षत्रसे लगी हुई ऐसा रश्मिकेतुनाम तारा होताहै सो सात दिनतक आकाशमें दीख पडे तो शुभ फलका देनेवाला जानना ॥ ३३॥

त्रयोदशर्क्षे याम्यादौ दृष्टो धूम्राह्वयः शिखी ॥
महाभयकरः प्रोक्तो ज्येष्ठाया वा समाश्रितः ॥३४॥
सप्ताहाभ्यधिको दृष्टो दशवर्षाणि दुःखदः ॥
गृहपर्वतवृक्षेषु सेनागोपुष्करेषु च ॥ ३५ ॥
दिव्यान्तरिक्षभौमाख्यो धूम्रकेतुः प्रदृश्यते ॥
यदा तदा विनाशाय प्राणिनां भवति ध्रुवम् ॥३६॥

जो धूम्रकेतु ताराकी शिखा (चोटी) हस्तनक्षत्रमें वा भरणीमें अथवा ज्येष्ठानक्षत्रमें लगी हुई होवे तो यह तारा महाभयकारी कहा है ॥ ३४ ॥ रश्मिकेतु तारा जो सात दिनसे अधिक दिन दीख पडे तो दशवर्षतक दुःख देनेवाला होताहै तथा घर, पर्वत, वृक्ष, सेना, गोशाला, पुष्पवाटिका इन स्थानोंके विषें ॥ ३५ ॥ दिव्य

अन्तरिक्ष, भौम नाम धूम्रकेतुका जो तारा है सो दीख पडे तो निश्चयकरके प्राणियोंका नाश करनेवाला होताहै ३६

सकृद्यामैकदृष्टश्च मण्याख्यः सूक्ष्मतारकः ॥
शिखास्यसूक्ष्माऽऋज्वीच पंचमासान्सुभिक्षकृत् ३७

धूम्रकेतुका छोटा तारा मणिनामका जिसकी छोटीसी चोटी सीधी होती है, ऐसा तारा एक वार एक पहरतक दीख पडे तो पांच मासतक सुभिक्षका करनेवाला होता है ॥ ३७ ॥

जलकेतुर्महास्निग्धा शिखा यस्यापरोन्नता ॥
दृष्टः करोति शान्तिं च नव मासान्सुभिक्षकृत् ३८॥

बहुत चिकना पश्चिमकी ओर ऊँची चोटीवाला जलकेतुनामका तारा दीखे तो नव मासतक सुभिक्ष और शान्तिको करता है ॥ ३८ ॥

भवेत्केतोश्च सुस्निग्धा हरिपुच्छोपमा शिखा ॥
सूक्ष्मैकतारा प्राग्दृष्टा लोकानां शुभदा मता॥३९॥

एक सुन्दर चिकना घोडेकी पुच्छसरीखी चोटीवाला

छोटा केतु तारा पूर्वदिशामें दीख पडे तो लोकोंको शुभ देनेवाला होताहै ऐसा जानना ॥ ३९ ॥

पद्मकेतुर्मृणालाभः पश्चिमायां प्रदृश्यते ॥
निशमेकां तदा सप्त वर्षाणि च सुभिक्षकृत् ॥ ४० ॥

पद्मकेतुनामक तारा कमलनालके समान पतली चोटी वाला पश्चिमदिशामें दीख पडे तो सात वर्षतक सुभिक्षका करनेवाला जानना ॥ ४० ॥

आवर्तकः सव्यशिखो निशार्द्धे संप्रदृश्यते ॥
यावन्मुहूर्तान् रक्ताभस्तावन्मासान्सुभिक्षकृत् ॥ ४१ ॥

जिसके बायें ओर चोटी होय ऐसा आवर्तकनामका तारा लाल रंगका अर्धरात्रिसमय जितने मुहूर्ततक दीख पडे उतनेही मासतक सुभिक्ष करनेवाला जानना ॥ ४१ ॥

सन्ध्याकाले पश्चिमायां शूलाकारोरुणप्रभः ॥
वियत्त्र्यशं समाक्रम्य स्थितो यः संप्रदृश्यते ॥
यावन्मुहूर्तास्तावन्ति वर्षाण्यशुभदः स्मृतः ॥ ४२ ॥

जो संध्यासमय पश्चिमदिशामें शूलके आकार लाल

रंगका तारा आकाशके तिहाई भागमें फैला हुआ दीख पडे जितने मुहूर्तपर्यन्त दिखाई देवे उतने वर्ष शुभका देनेवाला कहा है यहां दो घडीका मुहूर्त जानना ॥ ४२ ॥

यस्मिन् ऋक्षे स्थितः केतुराकाशे संप्रदृश्यते ॥
तद्दिश्यूहान्समाहन्ति ऋक्षदेशान् वदामि तत् ॥४३

जिस नक्षत्रपर स्थित भया केतु आकाशमें दीख पडे तो उस नक्षत्रकी दिशाके देशोंको नाश करे है अब कौनसे नक्षत्रपर कौन देशका नाश करे है सो कहता हूं ॥ ४३ ॥

अश्विन्यामश्वकं हंति याम्ये केतुः किरातकान् ॥
वह्नौ कलिंगनृपतीन् रोहिण्यां शूरसेनकान् ॥४४॥

अश्विनीनक्षत्रमें जो केतुका उदय हो तो अश्वकदेश-को नाश करता है, भरणीनक्षत्रमें केतु उदय होनेसे किरात-देशको, कृत्तिकामें कलिंगके राजाको, रोहिणीमें शूरसेन-देशको नाश करे है ॥ ४४ ॥

औशीनरं मृगे रौद्रे जलजीवाधिपे तथा ॥
अदितोऽश्मकनाथं च पुष्ये च मगधाधिपम् ॥ ४५॥

आशिकेशं च भौजंगे मघायां चांगनायकम् ॥
भगभे पाण्डुनाथं च अर्य्यम्णे चोज्जयिन्यकम् ४६॥

मृगशिरा और आर्द्रापर केतुका उदय हो तो औशीनर तथा जलजीवोंके स्वामीको हानि पहुँचावे और पुनर्वसुपर अश्मकदेशके राजाका, पुष्यमें मगधदेशके राजाका ॥ ४५ ॥ और आश्लेषामें अशिकेशदेशका, मघापर अंगदेशके राजाका, पूर्वाफाल्गुनीमें पाण्डुदेशके राजाका, उत्तराफाल्गुनीमें उज्जैनका नाश करे ॥ ४६ ॥

कुरुक्षेत्राधिपं त्वाष्ट्रे हस्ते दंडकनायकम् ॥
वाते कांबोजकाश्मीरौ द्विदेवे कोशलाधिपम्॥४७॥
मैत्रे पौंड्राधिनाथं च सार्वभौमं पुरन्दरे ॥
मूले भद्राधिनाथं च जलदेवे च काशिपम् ॥ ४८ ॥

चित्रामें केतूदय हो तो कुरुक्षेत्रके राजाका, हस्तपर हो तो दण्डकदेशके राजाका, स्वातिमें कांबोज और काश्मीरका, विशाखापर हो तो कोशलदेशके राजाका ॥ ४७ ॥ अनुराधापर पौंड्रदेशके राजाका, ज्येष्ठापर सब देशोंके

राजाओंका, मूलमें भद्रदेशके राजाका, पूर्वाषाढापर हो तो काशीके राजाका नाश करे ॥ ४८ ॥

योधे चार्जुनचैद्यांश्च वैश्वदेवे विधिं तथा ॥
श्रवणे केकयाधीशं पांचालं वासवे तथा ॥ ४९ ॥
वारुणे सिंहलपतिं पूर्वाभाद्रे च वंगपम् ॥
अहिर्बुध्न्ये नैमिपपं रेवत्यां केरलाधिपम् ॥ ५० ॥

उत्तराषाढापर तथा अभिजित् नक्षत्रपर केतुका उदय हो तो योधदेश अर्जुनदेश और चंदेलोंके राजाका, श्रवणपर केकयदेशके राजाका तथा धनिष्ठामें पांचाल (पंजाब) देशके राजाका ॥ ४९ ॥ शतभिषानक्षत्रमें सिंहलदेशके राजाका, पूर्वाभाद्रपदापर बंगालदेशके राजाका, उत्तराभाद्रपदापर नैमिषपतिका, रेवतीपर केरलदेशके स्वामीका केतु नाश करे है ॥ ५० ॥

यस्यां दिश्युदयं याति केतुस्तामभियोजयेत् ॥
यतो यतः शिखा याति राजा गच्छेत्ततस्ततः ५१॥

जिस दिशामें केतूदय होता है उस दिशाको नाश क-

रवेर्वाले जानना और जिस दिशामें केतुकी चोटी तक फैलती है, वहांही राजाको नाश करनेवाला जानना ॥ ५१ ॥

पंचोत्तरशतं त्वेके केतुनां प्रवदन्ति च ॥
चतुर्दश रवेः पुत्रा वरुणस्य दशैव तु ॥ ५२ ॥
अग्निपुत्राश्चतुस्त्रिंशद्यमस्य नव कीर्तिताः ॥
अष्टादश कुबेरस्य वायोर्विंशतिरीरिताः ॥ ५३ ॥

कोई एक आचार्य्य एक सौ पांच केतु वर्णन करते हैं, उनमें चौदह सूर्यके पुत्र हैं, दश केतु वरुणके पुत्र हैं ॥ ५२ ॥ और चौंतीस अग्निके पुत्र हैं, नव यमके पुत्र कहे हैं, अठारह कुबेरके पुत्र हैं, बीस केतु वायुके पुत्र कहे हैं यह सब १०५ केतु कहे हैं ॥ ५३ ॥

अथ प्रतिमासे केतूदयफलम् ।

आश्विने कार्तिके सूर्यपुत्राणामुदयं यदि ॥
मेघा जलं न मुंचन्ति दुर्भिक्षं च तदादिशेत् ॥ ५४ ॥
चतुष्पदा विनश्यन्ति राजानः कलहप्रियाः ॥

नारायणेन लिखितं मिहिरेण च भाषितम् ॥ ५५ ॥

आश्विन (कुंवार) और कार्तिक मासमें सूर्यके पुत्र जो १४ केतु हैं उनका उदय होवे तो मेघ जल नहीं बर्षे और दुर्भिक्ष (अकाल) पडे ॥ ५४ ॥ तथा चौपायोंका नाश होवे, राजाओंमें कलह होवे यह नारायणने लिखा और वराहमिहिराचार्य्यने वर्णन किया है ॥ ५५ ॥

वारुणा उदयं याति श्रावणे च नभस्यके ॥
स्यात्पृथ्वी जलसस्याढ्या लोकाश्चानन्दसंयुताः ५६

वरुणके पुत्र जो दश केतु सो श्रावण और भाद्रमासमें उदय होवें तो पृथिवी जल और धान्यसे युक्त होवे और सम्पूर्ण मनुष्य आनन्दसे संयुक्त होवें ॥ ५६ ॥

मार्गे मासि तथा पौषे दृश्यन्ते वह्निपुत्रकाः ॥
अग्निचौरभयं तत्र प्रजा नाशं प्रयान्ति च ॥ ५७ ॥

मार्गमास तथा पौषमासमें अग्निके पुत्र ३४ केतु दीख पडें तो अग्नि चोरसे भय होवे, और प्रजाका नाश हो ॥ ५७ ॥

पृथिवी भयसंयुक्ता प्राणिनां व्याधिमादिशेत् ॥
चैत्रमाधवमासे तु कुबेरस्यात्मजः किल ॥ ५८ ॥
यान्त्युद्गमं तदा मेघा बहुवारिप्रदा मताः ॥
धनधान्ययुता पृथ्वी प्रजाश्चानन्दसंयुताः ॥ ५९ ॥

और पृथिवीपर भय होवे तथा प्राणियोंमें रोग उत्पन्न होवे चैत्र और वैशाखमासमें कुबेरके पुत्र जो १८ केतु हैं ॥ ५८ ॥ वे जो उदय होवें तो मेघ बहुत जल वर्षे, और पृथिवी धनधान्यसे परिपूर्ण होवे, तथा प्रजा सुखी होवे ॥ ५९ ॥

यमजाश्चोदयं यान्ति माघफाल्गुनयोः किल ॥
पृथिवी भयसंयुक्ता दुर्भिक्षं च समादिशेत् ॥ ६० ॥

यमके पुत्र जो केतु ९ हैं सो माघ वा फाल्गुनमें उदय होवे तो पृथिवीपर भय हो तथा दुर्भिक्ष (अकाल) पडे ॥ ६० ॥

वायुपुत्राः प्रदृश्यन्ते ज्येष्ठमासे शुचौ तथा ॥
उद्धता वांति वाता वै दिशश्च रजसा वृताः ॥ ६१ ॥

पतन्ति गिरिशृंगाणि निपतन्ति महीरुहाः ॥
चौराग्निजनिता पीडा राजानः कलहप्रियाः॥६२॥

वायुके पुत्र (२० केतु) के तारे ज्येष्ठमास तथा आषाढमासमें दीख पडें तो निश्चय प्रचंड पवन चले और दिशायें धूलमे ढक जावें ॥ ६१ ॥ पर्वतोंके शिखर गिर जांय; वृक्ष उखड जांय, चोरोंसे तथा अग्निसे पीडा होवे राजाओंमें कलह (लडाई) होवे ॥ ६२ ॥

अथ ग्रहाणां योगफलम् ।

रौद्रनक्षत्रगावेतौ यदि सूर्यमहीसुतौ ॥
मासं महर्घतां यान्ति धान्यानि स्वस्थता पुनः॥६३॥

अब आगे ग्रहोंके योगोंके फल वर्णन करते हैं, जो आर्द्रानक्षत्रपर सूर्य मंगल होवे तो एकमासपर्यन्त अन्न महंगा रहे, उपरांत भाव सस्ता हो जावे ॥ ६३ ॥

भानुकेतू च भरणीं मृगं वा यदि चास्थितौ ॥
लवणं महर्घतां याति सिंधुदेशोद्भवं विडम् ॥६४॥

सूर्य और केतु जो भरणी वा मृगशिरानक्षत्रपर स्थित

होवे तो सिंधुदेशमें उत्पन्न लवण (सेंधानमक) और विड (सांचर) लवण महंगा होवे ॥ ६४ ॥

बुधशुक्रमहीपुत्रा भुजंगर्क्षे समाश्रिताः ॥
नन्दन्ति लोकाः सुखिनः सुभिक्षं जनयन्ति च ६५

जो बुध, शुक्र और मंगल यह तीनों आश्लेषा नक्षत्रपर स्थित होवें तो लोकमें मनुष्यादि सुखी होवें और सुभिक्ष (सस्ता) भाव होवे, सम्वत्सर अच्छा होवे ॥ ६५ ॥

स्वातिं याति यदा भौमो रेवतीं यदि भास्करः ॥
चलचित्ता महीपालाः प्रजा नाशं प्रयाति च ॥६६॥

जो स्वातिका मंगल होवे और रेवतीका सूर्य होवे तो राजाओंका चित्त चलायमान हो प्रजाका नाश होवे॥ ६६

अनुराधां गतः शौरिर्ज्येष्ठायां च बृहस्पतिः ॥
पश्चिमायां तदा युद्धं प्रजा नाशं प्रयाति च ॥ ६७॥

जो अनुराधानक्षत्रपर शनैश्चर और ज्येष्ठापर बृहस्पति होवे तो पश्चिममें युद्ध और प्रजाका नाश होवे ॥ ६७ ॥

मूले मन्दो बुधः स्वात्यां मघायां चन्द्रमा यदि ॥

संग्रहे सर्वधान्यानां लाभो भवति नान्यथा ॥ ६८ ॥

जो मूलनक्षत्रका शनैश्चर और स्वातिका बुध मघाका चन्द्रमा होवे, तब सब अन्नोंको संग्रह करनेसे लाभ होता है इसमें संशय नहीं जानना ॥ ६८ ॥

विश्वेशभे भगे मन्दाः सप्तमर्क्षे यदा रविः ॥
तदा जलविनाशः स्यात्प्रजानां कदनं महत् ॥६९॥

उत्तराषाढा नक्षत्रपर या पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रपर शनैश्चर होवे और पुनर्वसुमें सूर्य हो तो जलका विनाश (अवर्षण) और प्रजाको पीडा बहुत होवे ॥ ६९ ॥

श्रवणर्क्षे यदा क्रूरो ग्रहः कश्चित्समाश्रितः ॥
अन्नं महर्घतां याति गोधूमाश्च विशेषतः ॥ ७० ॥

जब श्रवणनक्षत्रपर कोई क्रूर ग्रह स्थित होवे तो अन्न महँगा होता है, विशेषकरके गेहूं महँगा हो जाता है ॥ ७०

वासवर्क्षे यदा शौरिर्भूमिपुत्रेण संयुतः ॥
न वर्षति जलं मेघाः सस्यहानिश्च जायते ॥ ७१ ॥

जो मंगलके साथ शनैश्चर धनिष्ठानक्षत्रपर होवे तो

मेघ जल नहीं वर्षे अर्थात् वृष्टि नहीं होवे और धान्यकी हानि होवे ॥ ७१ ॥

वारुणे च यदा जीवश्चित्रायां धरणीसुतः ॥
तदा नश्यंति गोधूमाः सस्यहानिर्महर्घता ॥ ७२ ॥

जो शतभिषाका बृहस्पति और चित्राका मंगल हो तो गेहूं नहीं होवे और सस्यकी हानि होवे तथा अन्न महँगा होवे ॥ ७२ ॥

भानुर्भौमो भृगुश्चैव शनिक्षेत्रे समाश्रिताः ॥
यदा निशापतिस्तत्र तदा दुर्भिक्षतो भयम् ॥७३॥

जो सूर्य मंगल और शुक्र यह तीनों शनैश्चरकी राशि (मकर कुंभ) में स्थित हों चन्द्रमाभी साथमें हो तो दुर्भिक्षसे भय होवे अर्थात् अकाल पडे ॥ ७३ ॥

वृषे राहुर्यदा भौमः षष्ठे मासि महाभयम् ॥
भवत्यत्र न सन्देहस्तदा दुर्भिक्षपीडनम् ॥ ७४ ॥

जो वृषराशिका राहु और मंगल होवे तो छठे

महीनेमें महाभय और दुर्भिक्ष पीडा होवे इसमें संदेह नहीं करना ॥ ७४ ॥

मिथुनर्क्षे सूर्यपुत्रो राहुर्वा यदि संस्थितः ॥
दुर्भिक्षं जायते तत्र पश्चिमायां नृपक्षयः ॥ ७५ ॥

जो मिथुनराशिका शनि हो अथवा राहु होवे तो दुर्भिक्ष होवे और पश्चिममें राजाओंका क्षय होवे ॥ ७५ ॥

रविराहुमहीपुत्राः शशिशुक्रशनैश्चराः ॥
एकराशिं गता होते तदा पृथ्वी भयाकुला ॥ ७६ ॥

जो सूर्य, राहु, मंगल, चंद्रमा, शुक्र, शनैश्चर ये ग्रह एक राशिमें स्थित हों तो पृथिवी भयसे आकुल होय अर्थात् पृथिवीपर सब मनुष्य भयसे युक्त होवें ॥ ७६ ॥

पूर्वदेशे महापीडा नृपाणां संक्षयो भवेत् ॥
प्रजानाशो व्याधिभयं तस्मिन्काले न संशयः॥७७॥

और पूर्वके देशोंमें महापीडा व राजाओंका क्षय होवे तथा प्रजाका नाश और व्याधिसे भय होवे उस समयमें ऐसा हो इसमें कुछ सन्देह नहीं ॥ ७७ ॥

सूर्यारचन्द्रमन्दाश्च राहुचन्द्रसुता यदि ॥
एकराशिं गता ह्येते दक्षिणस्यां भयप्रदाः ॥ ७८ ॥

सूर्य, मंगल, चन्द्र, शनि, राहु, बुध ये ग्रह एकराशिमें स्थित होवें तो दक्षिण दिशामें भय देवे ॥ ७८ ॥

एकराशिं गता ह्येते कुजाऽर्कशनिराहवः ॥
शुक्रो गुरुश्च तत्रैव तदा भयविवर्धनः ॥ ७९ ॥

एकराशिमें मंगल, सूर्य, शनि, राहु, शुक्र, गुरु होवें तो जगत्में भयकी वृद्धि होवे ॥ ७९ ॥

उत्तरे क्षत्रभंगः स्यान्नाऽत्र कार्य्या विचारणा ॥
रविचन्द्रकुजा जीवमन्दचन्द्रसुता यदि ॥ ८० ॥
समाश्रिता ह्येकराशिं तदा पृथ्वी भयाकुला ॥
राज्ञां नाशो व्याधिभयं प्रजानां संक्षयो भवेत् ॥ ८१ ॥

और उत्तर दिशामें किसी राजाका छत्रभंग हो जो सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शनि, बुध ॥ ८० ॥ एक राशिपर स्थित हों तो पृथिवीपर भय हो, और राजाओंका नाश, रोग भय व प्रजाका क्षय होवे ॥ ८१ ॥

कुजार्कजीवशुक्राश्च यदैकत्र समाश्रिताः ॥
भयं व्याधिं प्रकुर्वन्ति सर्वधान्यमहर्घता ॥ ८२ ॥

जो मंगल, सूर्य, गुरु, शुक एकराशिपर स्थित हों तो भय और व्याधिको करें व सम्पूर्ण अन्न महंगे होवें ॥ ८२ ॥

कुजार्केन्दुज्ञजीवाश्च सिंहराशिं समाश्रिताः ॥
छत्रभंगः प्रजानाशो भयभीता च मेदिनी ॥ ८३ ॥

मंगल, सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु ये ५ ग्रह सिंहराशिपर स्थित हों तो राजाका छत्रभंग, प्रजाका नाश हो और पृथिवी भयसे पीडित होवे ॥ ८३ ॥

एकराशिं गता ह्येते सौम्यशुक्रदिनाधिपाः ॥
सर्वधान्यमहर्घत्वं मेघाः स्वल्पजलप्रदाः ॥
एकनक्षत्रगा ह्येते तदा भयविवर्द्धनाः ॥ ८४ ॥

एकराशिपर बुध, शुक्र, सूर्य ये ग्रह होवें तो सब अन्न महंगे हों और वृष्टि थोडी होवे, यदि एक नक्षत्रपर यह ग्रह हों तो भय अधिक बढे ॥ ८४ ॥

यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः ॥

तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चान्नपरिक्षयः ॥ ८५ ॥

जो बृहस्पति शनि एकराशिपर हों अथवा बृहस्पतिसे सप्तम शनि हो तो प्रजाका विनाश और अन्नका नाश होवे ॥ ८५ ॥

कर्कमीनमृगस्त्रीषु शनिभौमौ यदा स्थितौ ॥
तदा युद्धाकुला पृथ्वी धनधान्यविवर्जिता ॥ ८६ ॥

जो कर्क, मीन, मकर, कन्या इन राशियोंपर शनि और मंगल होवे तो पृथिवीपर युद्ध बहुत होवे और प्रजा धनधान्यसे रहित होवे ॥ ८६ ॥

मिथुनस्त्रीधनुर्मीनराशौ मन्दो यदा भवेत् ॥
तदा भूपा विनश्यन्ति पृथ्वी शोणितपूरिता ॥ ८७ ॥

जो शनैश्वर मिथुन, कन्या, धन, मीन इन राशियोंपर हो तो राजाओंका विनाश हो और पृथिवी रुधिरसे पूरित होवे ॥ ८७ ॥

रविशुक्रसुराचार्य्या यदैकत्र समाश्रिताः ॥
राजभ्रंशः प्रजानाशः सर्वसस्यमहर्घता ॥ ८८ ॥

सूर्य, शुक्र, गुरु यह ग्रह जो एकराशिपर होवें तो राज्यका विगाड, प्रजाका नाश और सब तृणसंज्ञक धान्य महंगा होवे ॥ ८८ ॥

रविभार्गवभौमाश्च राशिमेकं समाश्रिताः ॥
घृततैलमसूरान्नं महर्घंति महाभयम् ॥ ८९ ॥

सूर्य, शुक्र, मंगल यह एकराशिपर होवें तो घी, तेल, मसूर यह अन्न महंगे हों और महाभय होवे ॥ ८९ ॥

सुरेज्यकविमन्दाश्च राहुरेकत्र संस्थिताः ॥
मेघा जलं प्रमुंचन्ति सर्वधान्यमहर्घता ॥ ९० ॥

गुरु, शुक्र, शनि, राहु यह चारों ग्रह एकराशिपर स्थित हों तो वृष्टि बहुत होवे तोभी सब अन्न महंगे होवें ॥ ९० ॥

रविज्ञगुरुमन्दाश्च राहुयुक्ता यदा स्थिताः ॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं तस्मिन्काले न संशयः ॥ ९१ ॥

सूर्य, बुध, गुरु, शनि और राहु यह ग्रह जो एकराशिपर हों तो उस समयमें अन्न सस्ता हो, और प्रजामें क्षेम तथा आरोग्यता होवे ॥ ९१ ॥

एकराशिं गता ह्येते भौमभार्गवसूर्यजाः ॥
तदा भूपा विनश्यन्ति प्रजानां संक्षयो भवेत् ॥ ९२ ॥

जो मंगल, शुक्र, शनि यह एकराशिपर स्थित हों तो राजाओंका नाश और प्रजाका क्षय होवे ॥ ९२ ॥

शुक्रमन्दारजीवाश्च यदैकत्र समाश्रिताः ॥
मेघा जलं न मुंचंति दुर्भिक्षं जायते तदा ॥ ९३ ॥

शुक्र, शनि, मंगल, गुरु, यह ४ ग्रह जो एकराशिपर स्थित हों तो वर्षा नहीं होवे और दुर्भिक्ष हो अर्थात् अकाल पडे ॥ ९३ ॥

बृहस्पति, सूर्य, शुक्र, शनि यह जो मंगलके एक राशिपर स्थित हों तो राजाओंको पीडा, अन्न महँगा होवे और लोकमें कोलाहल होवे जिससे प्रजा व्याकुल होवे ॥ ९८ ॥

शनिराहू यदैकत्र भवेतां सहितौ यदा ॥
सर्वधान्यमहर्घत्वं राजानो भयविह्वलाः ॥ ९९ ॥

जो शनि, राहु एक राशिपर हों तो सब अन्न महँगे हों और राजाओंको भयसे व्याकुलता हो ॥ ९९ ॥

एकराशिगतावेतौ धरापुत्रांगिरासुतौ ॥
तदा मेघा न वर्षन्ति वर्षाकाले न संशयः ॥१००॥

मंगल गुरु यह दोनों ग्रह एकराशिपर स्थित हों तो वर्षासमयमें मेघ नहीं वर्षा करें इसमें सन्देह नहीं॥ १०० ॥

महीसुतो दैत्यपुरोहितो गुरुर्यदैकनक्षत्रसमाश्रिता ग्रहाः ॥ तदा सुभिक्षं च यवान्नसंग्रहे मासे चतुर्थे विपुलो हि लाभः ॥ १ ॥

जो मंगल, शुक्र, बृहस्पति यह तीनों ग्रह एक नक्षत्रपर

स्थित हों तो सुभिक्ष (सस्ता) हो और जब अन्नसंग्रह करनेसे चौथे महीनेमें बहुतही लाभ होवै ॥ १ ॥

सप्त ग्रहा यदैकस्था गोलयोगस्तदा भवेत् ॥
दुर्भिक्षं राष्ट्रपीडा च तस्मिन् योगे न संशयः ॥ २ ॥

जो सात ग्रह एक राशिपर स्थित होवैं तो गोलयोग होता है, इस योगसे निस्सन्देह देशमें दुर्भिक्ष और राज-पीडा तथा प्रजामें क्लेश होवै ॥ २ ॥

अग्रे याति दिवानाथः पृष्ठे च भृगुनन्दनः ॥
मध्ये सोमसुतो याति भवत्यन्नमहर्घता ॥ ३ ॥

आगेकी राशिपर सूर्य और पीछेकी राशिपर शुक्र होवै और दोनोंके मध्यमें बुध होवै तो अन्नका भाव तेज हो जाता है ॥ ३ ॥

गच्छतोऽग्रे शुक्रशनी बुधः पृष्ठं समाश्रितः ॥
धनधान्याकुला पृथ्वी प्रजा नन्दन्ति सर्वशः ॥ ४ ॥

आगे शुक्र, शनि हो और बुध इन दोनोंसे पीछे राशि-पर स्थित हो तो पृथिवी धन और धान्यसे परिपूर्ण

होवै और प्रजा सब प्रकारसे सुखी होवे ॥ ४ ॥

भौमस्य पृष्ठतो याति भानुश्चेज्जलशोषकः ॥
भवत्यत्र न संदेहो विपरीतो जलप्रदः ॥ ५ ॥

जो मंगलके पीछेकी राशि वा अंशपर सूर्य होय तो जल सूख जावै अर्थात् वर्षा नहीं हो, इससे विपरीत अर्थात् सूर्यके पीछे मंगल हो तो वर्षा होवै इसमें सन्देह नहीं ॥ ५ ॥

मेषे समाश्रितो भानुर्वृषे च धरणीसुतः ॥
भयव्याधियुता लोका नृपाणां विग्रहो महान् ॥ ६ ॥

मेषराशिका सूर्य और वृषराशिका मंगल होवै तो लोकमें प्रजा भय और रोगसे युक्त होवे, तथा राजाओंमें बहुत विग्रह (बिगाड) होवे ॥ ६ ॥

वृषराशिं यदा प्राप्ताः शनिभार्गवभूमिजाः ॥
दुर्भिक्षं राष्ट्रभंगं च लोकानां भयमादिशेत् ॥ ७ ॥

जो वृषराशिपर शनि, शुक्र, मंगल यह ३ ग्रह होवें तो दुर्भिक्ष हो और राज्यभंग तथा लोकोंमें भय होवे ॥ ७ ॥

मेषे शनैश्चरो भानुर्भार्गवो भूमिजस्तथा ॥
दुर्भिक्षं लोकपीडा च भवेत्पृथ्वी भयाकुला ॥ ८ ॥

मेषपर शनैश्वर, सूर्य, शुक्र, मंगल यह ग्रह होवैं तो दुर्भिक्ष (तेजी) और लोकमें पीडा, तथा पृथ्वीपर भय होवै ॥ ८ ॥

वृषे भानुः कुजः शौरिस्तदा युद्धं समादिशेत् ॥
न वर्षन्ति जलं मेघा दुर्भिक्षं लोकपीडनम् ॥ ९ ॥

जो वृषराशिपर सूर्य, मंगल, शनि हों तो राजाओंमें युद्ध हो, मेघ जल नहीं वर्षे, और दुर्भिक्ष तथा लोकमें पीडा हो ॥ ९ ॥

मीनराशिगते मन्दे कर्कटस्थे बृहस्पतौ ॥
तुलाराशिगते भौमे तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ॥११०॥

मीनराशिपर शनि, कर्कके बृहस्पति, तुलाराशिपर मंगल हो तो दुर्भिक्ष हो अर्थात् अकाल पडे ॥ ११० ॥

शुक्रार्किभूमिपुत्रा हि तुलाराशिं समाश्रिताः ॥
तदा युद्धं महाघोरं राज्ञां चैव परस्परम् ॥ ११ ॥

शुक्र, शनि, मंगल यह तीनों ग्रह तुलाराशिके हों तो राजाओंमें परस्पर महायुद्ध भयका देनेवाला होवे ॥ ११ ॥

चन्द्रभार्गवधरासुता यदा मीनराशिमुपयांति वै तदा ॥ दुर्लभं भवति सर्वधान्यकं वारिदश्च न जलं प्रमुंचति ॥ १२ ॥

चंद्रमा, शुक्र, मंगल यह ग्रह जो मीनराशिपर हों तो सब अन्न महँगा हो जाय और मेघोंसे जल नहीं वर्षै॥ १२

गुरुयुक्तः शनिर्वक्रं करोति च यदा तदा ॥ नवमे मासि गोधूमतिलतैलमहर्घता ॥ १३ ॥

जब बृहस्पतिसे युक्त शनैश्चर वक्री होय तब नववें मासमें गेहूँ, तिल, तेल यह महँगे हो जावैं ॥ १३ ॥

गुरुशुक्रावेकराशौ गतौ दुर्भिक्षदुःखदौ ॥ युद्धदौ शनिमाहेयौ तदा दुर्भिक्षकारकौ ॥ १४ ॥

बृहस्पति, शुक्र यह दोनों जो एक राशिपर हों तो दुर्भिक्षसे पीडा हो और दुःख हो, शनि, मंगल यह एक राशिपर हों तो युद्ध तथा दुर्भिक्ष (तेजी) होवै॥ १४ ॥

यदा शुभग्रहः कश्चिदतिचारं करोति च ॥
तदा नृपाः क्षयं यान्ति दुर्भिक्षं तत्र दारुणम् ॥१५॥

जो कोई शुभग्रह अतिचारगत होवे तो राजाओंका नाश और दारुण दुर्भिक्ष हो अर्थात् महाकाल पडे ॥ १५ ॥

अतिचारं यदा क्रूरो ग्रहः कश्चित्करोति च ॥
तदा नन्दन्ति राजानो धनधान्याकुला धरा ॥ १६॥

जब कोई क्रूर ग्रह अतिचारी हो तो राजालोग सुखी हों और पृथिवी धनधान्यसे परिपूर्ण होवे ॥ १६ ॥

यदातिचारगो मन्दो वक्री भूतोंगिरः सुतः ॥
तदा नन्दन्ति राजानो धनधान्याकुला धरा ॥ १७

जो शनैश्चर अतिचारी हो, बृहस्पति वक्री होवे तो राजालोग सुखी होवें, और पृथिवी धनधान्यसे पूरित होवै ॥ १७ ॥

यदा क्रूरग्रहो वक्री शुभश्चैवातिचारगः ॥
तदा भवति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम् ॥ १८ ॥

जब क्रूरग्रह वक्री और शुभग्रह अतिचारी हो, तब दुर्भिक्ष (तेजी) हो, और राजाओंका परस्पर युद्ध होवै ॥ १८ ॥

यस्मिन्मासे पूर्णिमायां यदा वर्षति वारिदः ॥
गोधूमघृतधान्यानां तस्मिन्मासे महर्घता ॥ १९ ॥

जिस महीनेमें पूर्णिमाके दिन वर्षा होवे तो तिस महीनेमें गेहूँ, घी, अन्न महँगा हो जावै ॥ १९ ॥

यदा मलिम्लुचे मासि भौमो राश्यन्तरे व्रजेत् ॥
गुरुर्वा महती वृष्टिरथ वा लोकसंक्षयः ॥ १२० ॥

जो मलमासमें मंगल वा बृहस्पति दूसरी राशिपर जावे तो वर्षा बहुत होवे अथवा लोकका क्षय होवै ॥ १२० ॥

कार्तिके मार्गशीर्षे च संक्रांतौ वारिवर्षणम् ॥
तदा महर्घता पौषे सस्यबुद्धिश्च मध्यमा ॥ २१ ॥

कार्तिक और मार्गशिरमासमें संक्रांतिके दिन जो मेघ वर्षे तो पौषमें अन्न महँगा होवे और सस्य मध्यम होवै ॥ २१ ॥

गुरुशुक्रार्कशशिजा यदैकत्र समाश्रिताः ॥
घातयोगं विजानीयात्पांसुवृष्टिस्तदा भवेत् ॥ २२ ॥

बृहस्पति, शुक, सूर्य, बुध यह जो एक राशिपर हों तो घात योग जानिये, यह योग होनेसे धूलिकी वर्षा होती है ॥ २२ ॥

सूर्याद्विधुः पंचमसप्तमः स्यात्क्षोणीसुतो याति तथारिगेहे ॥ दिग्दाहयोगो मुनिना प्रदिष्टः स जात उल्कापतनादिकारी ॥ २३ ॥

सूर्यसे चन्द्रमा पाचवें वा सातवें हो और मंगल छठे होवें तो यह दिग्दाहयोग उल्कापात मुनियोंने कहाहै २३

उपप्लवात्सप्तमगो महीजो महीसुतात्पंचमगो बुधश्च ॥ बुधाच्च केन्द्रे हिमगो यदा स्यात् भूकंपयोगः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ २४ ॥

राहुसे सप्तमस्थानमें मंगल हो और मंगलसे पंचम घरमें बुध हो, बुधसे केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें चन्द्रमा होवै तो मुनिजनोंने भूकम्प योग कहा है ॥ २४ ॥

अथ संक्रान्तिप्रतिउत्पातफलम् ।

मेषे वृषे कुलीरार्के यदोत्पाता भवन्ति हि ॥
दक्षिणस्यां तदा युद्धे प्रजा दुर्भिक्षपीडिताः ॥ २५ ॥
मिथुनेऽर्केऽन्ननाशः स्याद्विन्ध्ये सिंहलके हरौ ॥
कान्यकुब्जे महापीडा कन्यकायां स्थिते रवौ ॥२६॥

जो मेष, वृष, कर्कके सूर्यमें उत्पात होवें तो दक्षिण दिशामें युद्ध होवे और प्रजा दुर्भिक्षसे पीडित होवै॥ २५॥ मिथुनके सूर्यमें उत्पात होनेसे अन्नका नाश हो, विन्ध्याचलके मध्यमें और सिंहके सूर्यमें उत्पात हो तो सिंहलदेशमें अन्नकी हानि हो तथा कन्याके सूर्यमें उत्पात होनेसे कनौजदेशमें बहुत पीडा होवे ॥ २६ ॥

तौलिन्यर्के च दुर्भिक्षं देशभंगोथ पिंगले ॥
वृश्चिके च मृगे सूर्ये दुर्भिक्षं नर्मदातटे ॥ २७ ॥
धनुष्यर्के विनश्यन्ति देशाः कालिंजरादयः ॥
भद्रदेशस्य नाशः स्यात्कुम्भेऽर्के सस्यपीडनम् २८

तुलाके सूर्यमें हो तो दुर्भिक्ष (तेजी) हो, मीनमें हो तो देशभंग हो वृश्चिकके सूर्यमें हो तो और मकरके सूर्यमें हो

तो नर्मदाके निकटदेशोंमें दुर्भिक्ष होवे ॥ २७ ॥ धनुके सूर्यमें उत्पात हो तो कालिंजर आदि देश नाश होवें तथा कुंभके सूर्यमें उत्पात हो तो भद्रदेशका नाश हो और सस्य (तृणधान्य) कमती होवे ॥ २८ ॥

अथ त्रिधा वृष्टियोगः ।

शुक्रस्यास्तमये वृष्टिरिज्ये चोदयमागते ॥
संचरत्यवनीसूनौ मन्दे वृष्टिस्त्रिधा मता ॥ २९ ॥

शुक्रके अस्तमें और बृहस्पतिके उदयमें तथा मंगल व शनैश्वरके संचारमें वृष्टि होती है यह तीन प्रकारकी वृष्टी कही है ॥ २९ ॥

अथ कर्कमकरसंक्रान्तौ वारफलम् ।

यदा कर्कस्य संक्रान्तिरथ वा मकरस्य सा ॥
भवत्यर्कार्किभौमानां वारे दुःखप्रदा मता ॥ १३० ॥

जो कर्क अथवा मकरकी संक्रान्ति सूर्य, शनि, मंगल इन वारोंमें होवे तो प्रजाको दुःख देनेवाली जानना १३०

अथ अगस्त्युदयफलम् ।

दिवोदितो यदागस्त्यस्तदा भयकरः स्मृतः ॥
दुर्भिक्षव्याधिजनको लोकानां नात्र संशयः॥३१॥

जो अगस्त्यमुनिका तारा दिनमें उदय होवै तो प्रजाको भयकारी कहा है और लोकमें दुर्भिक्ष (अकाल) व रोग उत्पन्न हो इसमें संदेह नहीं ॥ ३१ ॥

अथ तिथिवृद्धिस्तथा क्षयफलम् ।

यदा याति वृद्धिं सिताख्यश्च पक्षस्तदा यान्ति वृद्धिं नृपा लोकसंघाः ॥ समा सौख्यदा हानिकारी तु हीना तथा कृष्णपक्षे फलं व्यत्ययेन ॥ ३२ ॥

जो शुक्लपक्षमें कोई तिथि बढे तो राजा और प्रजागण वृद्धिको प्राप्त होवै, और समा अर्थात् कोई तिथि घटे न बढे तो सुख होवै, तथा कोई तिथि घटे तो हानिकारी जानना, और कृष्णपक्षमें इससे विपरीत फल जानना ३२॥

अथ त्रयोदशदिनपक्षफलम् ।

यदा च जायते पक्षस्त्रयोदशदिनात्मकः ॥
भवेल्लोकक्षयो घोरो मुण्डमालायुता मही ॥ ३३ ॥

जो तेरह दिनका पक्ष होवे तो लोकका नाश हो और पृथिवीपर युद्ध होनेसे रुंडमुंडोंसे युक्त पृथिवी होवे॥ ३३॥

अथ चैत्रादिमासेषु तिथ्यादियोगफलम् ।

तत्रादौ चैत्रमासफलम् ।

अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि फलं योगसमुद्भवम् ॥
मासवारतिथीनां च सम्यक् ज्ञानप्रकाशनम् ॥३४॥

अब आगे अन्यप्रकारसे मास, वार, तिथियोंके योगसे उत्पन्न जो फल, जिससे सब हाल जाना जाता है सो कहताहूँ ॥ ३४ ॥

प्रतिपदि रविवारश्चैत्रमासे यदि स्यान्न भवति बहुवृष्टिर्दुःखिता लोकसंघाः ॥ अमृतकिरण-वारे ज्ञास्फुजिद्वाक्पतीनां भवति ननु धरित्री सस्यतोयाभिपूर्णा ॥ ३५ ॥

जो चैत्रमासके शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके दिन रविवार होवै तो वृष्टि बहुत नहीं होवै और प्रजालोग दुखी होवै, तथा चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र यह वार हों तो निश्चय सम्पूर्ण पृथ्वी तृण, अन्न, जलसे परिपूर्ण होवै ॥ ३५ ॥

वारः स्यान्मन्दकुजयोस्तदा वृष्टिर्न जायते ॥
सस्यानि न प्ररोहन्ति विग्रहं यान्ति भूमिपाः॥३६॥

शनि, मंगल वार होवे तो वर्षा नहीं होवे और तृण-धान्य नहीं उत्पन्न हो, तथा राजाओंमें विग्रह होवै॥ ३६ ॥

चैत्रस्य कृष्णपक्षे वा पंचम्यां बुधवासरे ॥
भौमो वक्रगतिर्याति घृततैलमहर्घता ॥ ३७ ॥
शाल्यन्नं चैव गोधूमास्तदा यान्ति महर्घताम् ३८॥

चैत्रमासके कृष्णपक्षमें पंचमी बुधवारको जो मंगल वक्री होवे तो घी और तेल महँगा हो जावे ॥ ३७ ॥
और चांवल तथा गेहूँ महँगे होवें ॥ ३८ ॥

गुरुशुक्रौ यदैकत्र चैत्रमासे व्यवस्थितौ ॥ ३९ ॥
तैलाज्यतिलसूत्राणां संग्रहे च कृते सति ॥

मासद्वये व्यतीते तु विक्रये लाभमादिशेत् ॥ १४० ॥

जो चैत्रमासमें बृहस्पति, शुक्र एक राशिपर होवें ॥ ३९ ॥ तो तेल, घी, तिल, सूत्र इन वस्तुओंके संग्रह करनेसे दो महीने उपरान्त बेचनेमें बहुत लाभ होवे ॥ १४० ॥

चैत्रमासस्य शुक्लायां पंचम्यां यदि वर्षणम् ॥
वर्षाकाले तदा मेघा न वर्षन्ति जलं बहु ॥ ४१ ॥

चैत्रमासके शुक्लपक्षमें पंचमीके दिन जो वृष्टि होवै तो वर्षासमयमें जल बहुत नहीं वरषे ॥ ४१ ॥

मधुमासे कृष्णपक्षे तिथिवृद्धिर्यदा भवेत् ॥
शुक्लपक्षस्य हानिः स्यादन्नहीना तदा मही ॥ ४२ ॥

चैत्रमासके कृष्णपक्षमें जो तिथिवृद्धि होय, और शुक्लपक्षमें तिथिहानि हो तो पृथिवी अन्नसे हीन होवै॥ ४२॥

चैत्रमासेऽर्कसंक्रान्तौ यदि वर्षति वासवः ॥
वैशाखे मासि वा ज्येष्ठे तदा सस्यमहर्घता ॥ ४३ ॥

चैत्रमासमें संक्रांतिके दिन जो मेघ वर्षे तो वैशाख वा

ज्येष्ठमासमें सस्य (तृणधान्य) महँगा हो जावे ॥ ४३ ॥

चैत्रमासस्य शुक्लायां सप्तम्यां दृश्यते घनः ॥
उद्धता वांति वाता वै अथवा निर्मला दिशः ॥४४॥
तदा संग्रहणं कार्य्यं गोधूमस्य विपश्चिता ॥
विक्रीते श्रावणे मासे लाभश्च त्रिगुणो भवेत् ॥४५॥
पंचम्यामपि योगोयं चिन्तनीयो विचक्षणैः ॥
वर्षणं च त्रयोदश्यां तदा दुर्भिक्षतो भयम् ॥ ४६ ॥

चैत्रमासके शुक्लपक्षमें सप्तमीके दिन जो मेघमंडल होवे तो वर्षाकालमें पवन बहुत चले, अथवा आकाश निर्मल हो जावे ॥ ४४ ॥ तब ऐसा योग देख चैत्रहीसे गेहूँका संग्रह करे फिर सावनमहीनेमें बेचनेसे तिगुना लाभ होवे ॥ ४५ ॥ यह योग पंचमीतिथिमेंभी होनेसे पंडितजन ऐसाही फल जाने चैत्रशुदी तेरसको जो वर्षा होय तो दुर्भिक्षसे प्रजामें भयकाल होवे ॥ ४६ ॥

पंचमी रोहिणीयुक्ता सप्तमी रौद्रसंयुता ॥
नवमी पुष्यसंयुक्ता स्वातियुक्ता च पूर्णिमा

भवत्यत्र यदा वृष्टिस्तदा प्रावृष्यवर्षणम् ॥४७॥

जो चैत्रमासके शुक्लपक्षकी पंचमीको जो रोहिणी नक्षत्र होवे, सप्तमीको आर्द्रा, नवमीको पुष्य और पूर्णिमाके दिन स्वाति नक्षत्र होवे । इन दिनोंमें जो वर्षा होवे तो वर्षासमयमें वृष्टि नहीं होवे ॥ ४७ ॥

चैत्रे मासि तृतीयायां पंचम्यां फाल्गुने तथा ॥४८॥
सप्तम्यां माघमासे च माधवे प्रथमेऽहनि ॥
वाता वान्ति तदा वृष्टिर्वर्षाकाले न संशयः ॥४९॥

चैत्रमासमें तीजके दिन, तथा फाल्गुनमासमें पंचमीके दिन ॥ ४८ ॥ और माघमासमें सप्तमीको, वैशाखमें प्रतिपदाके दिन, इन तिथियोंमें जो वायु चले तो वर्षासमयमें वृष्टि बहुत होवे इसमें संशय नहीं ॥ ४९ ॥

चैत्रे वा श्रावणे मासि यदा पंचारवासराः ॥
राजानश्च क्षयं यान्ति मन्दा दुर्भिक्षकारकाः ॥१५०
नाशयन्ति प्रजाः शुक्रा रविसौम्या विनाशकाः ॥
चन्द्राः कल्याणजनका गुरवो जळघातकाः ॥ ५१॥

चैत्र वा श्रावणमासमें जो पाँच मंगलवार होवें तो राजाओंका क्षय होवे, पांच शनि होवें तो दुर्भिक्ष (अकाल) पडै ॥ १५० ॥ और पांच शुक्र प्रजाका नाश करते हैं, पांच सूर्य व बुधभी विनाशकारक हैं, पांच सोमवार कल्याणकारी हैं, पांच गुरुवार जलके घातक हैं अर्थात् वृष्टिनाशक जानने यह चैत्रमासका विचार कहा ॥५१॥

अथ वैशाखमासफलम् ।

माधवस्य सिते पक्षे पंचम्यां शनिवासरे ॥
भरण्यादिचतुष्केषु हस्ते भौमस्य वासरे ॥ ५२ ॥
पिप्पलीनारिकेरं च ताम्रं कांस्यं च पूगकम् ॥
रक्तवस्त्रं च सर्वाणि महर्घन्ति न संशयः ॥ ५३ ॥

वैशाखमासके शुक्लपक्षमें पंचमीके दिन वा शनिवारमें भरणी आदि चार नक्षत्र (भ०कृ०रो०मृ०) हो और मंगलवारमें हस्त नक्षत्र हो ॥५२॥ तो पीपरी, नारियल, तांबा, कांसा, सुपारी, लालवस्त्र यह सब वस्तु महँगी हो जावें ॥ ५३ ॥

वैशाखे शुक्लप्रतिपद्दशमी चाभ्रसंयुता ॥
भवत्यत्र न सन्देहः प्रावृट्काले ह्यवर्षणम् ॥ ५४ ॥

वैशाखमें शुक्लपक्षकी प्रतिपदा वा दशमीके दिन जो बादल दीख पडें तो निस्सन्देह वर्षाकालमें वृष्टि नहीं होवे ॥ ५४ ॥

वैशाखे च त्रयोदश्यां यदा भौमाऽर्कवासरौ ॥
कृष्णा च शर्करा नागवल्ली दुर्लभतां व्रजेत् ॥
तथा महर्घतां याति सैन्धवं रक्तचन्दनम् ॥५५ ॥

वैशाखमासकी त्रयोदशी जो मंगल वा रविवारको हो तो पीपरी, शक्कर, पान यह तेज हो जावें । तथा सेंधालवण व लालचन्दन महँगे होवें ॥ ५५ ॥

वैशाखे शुक्लपंचम्यां घनैराच्छादितं नभः ॥ ५६ ॥
गर्जनं वारिवृष्टिर्वा तदा सस्यस्य संग्रहः ॥
कर्तव्यो भाद्रमासे तु विक्रीते लाभमादिशेत् ॥५७॥

वैशाखमासमें शुक्लपक्षकी पंचमीके दिन जो आकाश मेघोंसे आच्छादित होवै ॥ ५६ ॥ और गरजे अथवा

वृष्टि होवै तो सस्य (तृणधान्य) संग्रह करे, फिर भाद्र-
मासमें बेचनेसे लाभ होवै ॥ ५७ ॥

अथ ज्येष्ठमासफलम् ।

ज्येष्ठकृष्णप्रतिपदि भौमाऽर्कबुधवासराः ॥
यदा भवन्ति लोकानां तदा व्याधिभयं भवेत्॥५८॥

जो ज्येष्ठमासके कृष्णपक्षकी प्रतिपदाके दिन मंगल,
रवि, बुध इन वारोंमेंसे कोई वार होवै तो लोकमें रोग
भय होवै ॥ ५८ ॥

ज्येष्ठशुक्लप्रतिपदि यदि स्यान्मन्दवासरः ॥
क्षत्रभंगः प्रजापीडा दुर्भिक्षं च तदादिशेत् ॥ ५९ ॥

ज्येष्ठशुदी प्रतिपदाको जो शनिवार हो तो क्षत्रभंग हो,
प्रजाको पीडा हो और दुर्भिक्ष (तेजी) पडै ॥ ५९ ॥

ज्येष्ठाद्ये बुधवारश्चेद्रूपं त्वागामिके भयम् ॥
तत्र चेत् सूर्यवारः स्यात्तदा युद्धाकुला धरा॥१६०॥

जो ज्येष्ठशुक्ल प्रतिपदाको बुधवार होवै तो आगामी

(आगेके) वर्षमें भय होवै, तहां जो रविवार होवै तो पृथ्वीपर युद्ध होवै ॥१६०॥

ज्येष्ठमासे दर्शतियो रात्रौ मेघः प्रदृश्यते ॥
दिवसे वाप्यनावृष्टिर्जायते नात्र संशयः ॥ ६१ ॥

जो ज्येष्ठमासकी अमावास्याके दिन रात्रिमें मेघ दीख पडै अथवा दिनमें मेघ दीखे तो वर्षाऋतुमें वर्षा नहीं होवै इसमें सन्देह नहीं जानना ॥ ६१ ॥

ज्येष्ठस्य कृष्ण प्रतिपद्युक्ता स्याद्भानुना यदि ॥
वान्ति वातास्तदोग्रा वै भौमेन व्याधिमादिशेत् ६२

ज्येष्ठमासके कृष्णपक्षकी प्रतिपदाके दिन जो रविवार होवे तो प्रबल पवन चले, मंगलवार हो तो रोग होवे ॥६२

चन्द्रपुत्रेण दुर्भिक्षं गुरुणा सस्यसम्पदः ॥
भार्गवेण सुवृष्टिः स्याच्छशिनात्राकुला धरा ॥ ६३॥
शनिना च प्रजानाशश्छत्रभंगो ह्यवर्षणम् ॥
जायते नात्र सन्देहः कर्तव्यो दैवचिन्तकैः ॥ ६४ ॥

ज्येष्ठकृष्ण प्रतिपदाको जो बुधवार हो तो दुर्भिक्ष हो

बृहस्पति हो तो तृणधान्य बहुत उपजै, शुक्र हो तो अच्छी वर्षा होवे, चंद्रवार हो तो पृथिवीपर अन्न बहुत होवे ॥ ६३ ॥ शनिवार हो तो प्रजाका नाश हो तथा छत्रभंग और अवर्षण (वृष्टि नहीं) होवे, दैवज्ञोंको इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ ६४ ॥

ज्येष्ठमासे नवर्क्षाणि रौद्रादीनि विलोकयेत् ॥
निरभ्रेर्जलसम्पत्तिः साभ्रेर्ज्ञेयमवर्षणम् ॥ ६५ ॥

ज्येष्ठमासमें आर्द्रा आदि नव नक्षत्रोंतक जो आकाश निर्मल रहे तो वर्षा बहुत होवे, और बादल होवे तो वृष्टि नहीं होवे अर्थात् जिस दिन बादल हो वही नक्षत्र नहीं वर्षे ॥ ६५ ॥

ज्येष्ठस्य शुक्लसप्तम्यां श्रूयते घनगर्जितम् ॥
मेघश्छन्ननभो वापि वायुर्वहति दक्षिणः ॥
तिलस्य सँग्रहःकार्य्यो विक्रीते कार्तिके धनम् ॥ ६६ ॥

ज्येष्ठशुदी सप्तमीको जो मेघ गरजै अथवा मेघ आका-

क्षमें आच्छादित रहे, दक्षिणकी पवन चले तो तिलोंका संग्रह करके कार्तिकमें बेचनेसे लाभ होवे ॥ ६६ ॥

श्रवणर्क्षे धनिष्ठायां यदा मेघः प्रतिष्ठितः ॥
प्रावृट्काले तदा वृष्टिर्मेघो वृष्टिनिरोधकः ॥ ६७ ॥

ज्येष्ठमें श्रवणनक्षत्र, तथा धनिष्ठानक्षत्रमें जो मेघडंबर रहे तो वर्षाकालमें वृष्टि होवे और जो पूर्वोक्त नक्षत्रोंमें वर्षा होवे तो वर्षासमयमें अनावृष्टि होवे ॥ ६७ ॥

पूर्णिमायाममायां वा ज्येष्ठे व्योमान्वितं घनैः ॥
दिवा वा यदि वा रात्रौ तदा ज्ञेयमवर्षणम् ॥ ६८ ॥

जो ज्येष्ठमासमें पूर्णमासी वा अमावास्याके दिन आकाशमें बादल रहे दिनमें वा रात्रिमें तो अनावृष्टि जानना ॥ ६८ ॥

अथाषाढमासफलम् ।

आषाढमासे सितपंचमीतिथौ रव्यादिवारेषु यथाक्रमेण ॥ स्यादल्पवृष्टिर्विपुला च वृष्टि-र्युद्धं शुभं क्षेमसुखे च नाशः ॥ ६९ ॥

आषाढमासके शुक्लपक्षकी पंचमीको रविवार आदि वारोंका फल क्रमसे यह है, रविवार हो तो वर्षा थोडी हो, चंद्रवार हो तो बहुत वर्षा हो, मंगल हो तो शुद्ध हो, बुध हो तो शुभ है, गुरुवार हो तो क्षेम हो, शुक्रसे सुख, शनिवार होनेसे हानि होवै ॥ ६९ ॥

आषाढे शुक्लपंचम्यां शुभवारे शुभेक्षिते ॥
सम्पूर्णनिखिला धात्री धनधान्याकुला धरा॥ १७०॥

आषाढमाससे शुक्लपक्षकी पंचमीके दिन शुभ वार हो और उसपर शुभग्रहकी दृष्टि हो तो सम्पूर्ण पृथिवी धन और धान्यसे परिपूर्ण होवै ॥ १७० ॥

क्रूरग्रहयुते वारे लग्ने क्रूरेक्षिते तथा ॥
दुर्भिक्षं मरणं व्याधिश्चौरबाधा सतां सदा ॥ ७१ ॥

आषाढशुदीपंचमीको जो क्रूर वार हो तथा लग्नपर क्रूर ग्रहकी दृष्टि हो तो दुर्भिक्ष, मरण रोग और सज्जनोंको चोरोंसे भय हो, यहाँ वारप्रवृत्तिसमयकी लग्न लेना ॥ ७१ ॥

आषाढे कृष्णपक्षे चेदष्टम्यां रजनीपतिः ॥
मेघमध्ये च संयाति तदा पृथ्वी जलाकुला॥ ७२ ॥

आषाढमासकृष्णपक्षकी अष्टमीको जो चन्द्रमा बादलके बीच आच्छादित रहे तो पृथिवीपर वर्षा बहुत होवै ॥ ७२ ॥

तस्यामेव यदा रात्रौ निर्मलः शशिलांछनः ॥
दृश्यते छिद्रसंयुक्तस्तदा वाच्यमवर्षणम् ॥ ७३ ॥

उसी आषाढकृष्णाष्टमीको जो रात्रिमें चंद्रमा निर्मल हो और चन्द्रमामें छिद्र दीख पडे तो वर्षा नहीं होवै ऐसा कहना ॥ ७३ ॥

आषाढ्यां पूर्णिमायां च यदा वृष्टिस्तु जायते ॥
मासमेकं महर्घं स्यात्ततः पश्चात्सुभिक्षकृत् ॥७४॥

आषाढीपूर्णमासीके दिन जो वर्षा होवै तो एक मासतक महँगा होवै, उपरान्त सस्ता भाव होवै ॥ ७४ ॥

आषाढे कृष्णपक्षे तु निरभ्रे रविमण्डले ॥
नच वारि प्रवर्षन्ति प्रावृट्काले तदा घनाः ॥ ७५ ॥

आषाढमासके कृष्णपक्षमें जो सूर्यमण्डल निर्मल रहे और बादल नहीं होवै तो वर्षाऋतुमें मेघ जल वरषै ॥ ७५ ॥

आषाढे शुक्लपंचम्यां पश्चिमो यदि मारुतः ॥
यदि वा दृश्यते चापमैन्द्रं स्याद्वारिवर्षणम् ॥ ७६ ॥
तदा संग्रहणं कार्यं सस्यानां लाभमिच्छता ॥
विक्रीते कार्तिके मासि निश्चितं लाभमादिशेत् ७७॥

आषाढशुक्लपंचमीके दिन जो पश्चिमकी वायु चलै, अथवा इन्द्रधनुष दीख पडै और वर्षा होवै ॥ ७६ ॥ तो तृणधान्यका संग्रह लाभकी इच्छासे करै और कार्तिकमासमें बेचनेसे निश्चय लाभ होवै ॥ ७७ ॥

आषाढे स्वातिनक्षत्रे सविद्युदुपवर्षणम् ॥
तदा स्यादन्ननिष्पत्तिस्तोयपूर्णा वसुन्धरा ॥ ७८ ॥

आषाढमासमें स्वातिनक्षत्र जिस दिन हो उस दिन बिजली चमकै और वर्षा होवै तो अन्न बहुत उपजै और पृथिवी जलसे पूर्ण होवै अर्थात् वृष्टि अच्छी होवै॥ ७८॥

दये वाऽथ मध्याह्ने सन्ध्यायां सूर्य्यमंडलम् ॥
मेघच्छन्नं न शुभदं नवम्यां च शुचौ सिते ॥ ७९॥

आषाढमासके शुक्लपक्षकी नवमीको सूर्यके उदयसमय वा मध्याह्नसमय वा संध्यासमयमें सूर्यको मेघ आच्छादित करें तो शुभ नहीं होवे, समय अच्छा नहीं होवे ॥७९॥

अथ आर्द्राप्रवेशफलम् ।

वह्निवेदाष्टनन्देन्द्र एतत्संख्यासु भास्करः ॥
तिथिष्वार्द्रां यदा याति कष्टदः शेषके शुभः ॥८०॥

तृतीया, चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी इन तिथियोंमें जो आर्द्राका सूर्य होवे तो कष्टदायी जानना शेषतिथियोंमें शुभ जानना ॥ ८० ॥

रवौ भौमे तथा मन्दे रौद्रभं याति भास्करः ॥
तदा न शुभदः प्रोक्तः शुभदः शेषवासरे ॥ ८१ ॥

रवि, मंगल, शनि इन वारोंमें जो आर्द्रानक्षत्रपर सूर्य हो तो शुभ नहीं जानना, शेष वारोंमें शुभ नहीं कहाहै८१

यमाग्नीशाऽहिमूलेन्द्रप्रपितृवारिभके रविः ॥

यांत्यार्द्रामशुभः प्रोक्तः शेषर्क्षे शुभदः स्मृतः ॥८२॥

भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, मघा, पूर्वाषाढा इन नक्षत्रोंमें जो आर्द्रा नक्षत्रपर सूर्य प्रवेश होवे तो अशुभ कहिये, शेषनक्षत्रोंमें प्रवेश हो तो शुभ देनेवाले जानना ॥ ८२ ॥

शूले गण्डे व्यतीपाते व्याघाते परिघे शिवे ॥
वैधृतौ चातिगण्डे च आर्द्रां यात्यशुभो रविः ॥८३॥

शूल, गण्ड, व्यतीपात, व्याघात, परिघ, शिव, वैधृति, अतिगंड इन योगोंमें आर्द्रापर सूर्यप्रवेश हो तो अशुभ है शेषयोगोंमें शुभ जानना ॥ ८३ ॥

आर्द्राप्रवेशे वृष्टिश्चेत्सार्धमासमवर्षणम् ।
निर्मलं वृष्टिभूयः स्यात्सस्यपूर्णा वसुन्धरा ॥ ८४ ॥

आर्द्रानक्षत्रके सूर्यप्रवेश होतेही जो वृष्टि होय तो डेढ महीनेतक वर्षा नहीं होवे और जो उस [illegible] निर्मल रहे तो वर्षा बहुत हो और सस्य (तृणधान्य) पृथिवीपर बहुत होवे ॥ ८४ ॥

करी तथैव शबली मध्या फले कीर्तिता ॥ ८७ ॥

सन्ध्याकालमें वनमेंसे आये जो पशु उनमें प्रथम काले रंगका पशु अथवा वृष (बैल नगरमें प्रवेश करे तो पूर्ण वर्षा हो, और काली गौ प्रवेश करै तो प्राणियोंको सुख हो, श्वेत गौ प्रवेश करै तो वर्षाका नाश हो, कपिला गौ प्रवेश करै तो पवन बहुत चलै, रक्त श्वेत वर्णकी गौ जो प्रवेश करै तो सस्य (खरीफ) का नाश करै, चितकबरी गौ प्रवेश करै तो मध्यम फल जानना ॥ ८७ ॥

रोहिण्यर्क्षे यदाषाढे विद्युद्वारिप्रवर्षणम् ॥
रोचितं च घनेर्व्योम तदा सर्वं शुभं भवेत् ॥ ८८ ॥

जो आषाढमासमें रोहिणीनक्षत्रके दिन जो विजली चमके जल बरषै अथवा आकाश मेघसे रहित हो तो सब ऋतुओंमें शुभ फल होवे है ॥ ८८ ॥

न तत्र वारिपतनं न च पूर्वोत्तरानिलो ॥
तदा कालोऽतिघोरः स्यात्प्राणिनां नाऽत्र संशयः८९

जो रोहिणीनक्षत्रमें वृष्टि नहीं होवे और पूर्व तथा त्तरकी वायु चले तो अतिकठिन समय होवे जिसमें ाणियोंको क्लेश हो इसमें संशय नहीं जानना ॥ ८९ ॥

ाजापत्यर्क्षगे चन्द्रे पूर्वाह्णे वाति मारुतः ॥
शुभदोपि तदा स्याद्वै वृष्टिः श्रावणभाद्रयोः॥ १९०॥

आषाढमें रोहिणीनक्षत्र सोमवारको हो और पूर्वाह्ण-समय चले तो समय अच्छा होवे श्रावण भाद्रमासमें वर्षा बहुत होवे ॥ १९० ॥

अह्नस्तु पश्चिमे भागे पश्चिमो द्वौ प्रवर्षतः ॥
मध्याह्ने वाति वायुश्चेन्मध्यौ मासौ जलप्रदौ ॥ ९१॥

रोहिणीनक्षत्रके दिन दिनके पिछले प्रहरोंमें वर्षा हो और मध्याह्नमें जो पवन चले तो श्रावण भाद्रमासमें वृष्टि अच्छी होवे ॥ ९१ ॥

ोमस्तं दिवसं वाति यदा वायुः शुभप्रदः ॥
श्रावणादिषु मासेषु तदा सम्पत्तिरुत्तमा ॥ ९२ ॥

जो उस दिन समस्त दिन पवन चले तो समय अच्छा हो,

और श्रावणादि महीनोंमें उत्तम संपत्ति होवे ॥ ९२ ॥

वाति चेदशुभो वायुर्व्यत्ययेन फलं वदेत् ॥
तत्र यो बलवान्वायुस्तस्मात् ज्ञेयं शुभाशुभम्९३॥

तथा जो अशुभ पवन चले तो विपरीत फल जानना, तहां जो अनेक और बलवान् पवन चलें उसीके अनुसार शुभाशुभ फल जानना ॥ ९३ ॥

प्रजेशनक्षत्रगते सुधानिधौ शुभास्तु वाता गगनं च निर्मलम् ॥ मृगाः खगाः शान्तदिगानना यदा नन्दंति लोकाः सुखिनस्तदा भृशम् ॥ ९४ ॥

रोहिणीनक्षत्र चंद्रवारके दिन शुभ वायु चले और आकाश निर्मल रहे तथा पशु, पक्षी शांत दिशाको मुख करें तो लोकमें आनंद और सुखकी वृद्धि हो ॥ ९४ ॥

दक्षिणेन यदा याति रोहिण्यां रोहिणीपतिः ॥
दूरस्थो निकटस्थो वा जगत्कष्टप्रदायकः ॥९५॥
उत्तरस्यां यदा याति रोहिण्यां रोहिणीपतिः ॥

सोपसर्गात्तदा वृष्टिरस्पृशन् सुखिनो जनाः॥९६॥

रोहिणीनक्षत्रके दिन जो चन्द्रमा रोहिणीके दहिनी ओर दूर वा निकट स्थित हो तो संसारको कष्टदायक जानना ॥ ९५ ॥ और जो उत्तर ओर समीप विचरै अरु रोहिणीको स्पर्श नहीं करे तो लोकमें मनुष्य सुखी रहें ॥ ९६ ॥

रोहिणीशकटमध्यगः शशी शोकरोगभयदुः खदः स्मृतः ॥ शीतरश्मिमनुयाति रोहिणी कामिनो हि वशगास्तदांगनाः ॥ ९७ ॥

शकट (गाडी) के आकार जो रोहिणी तिसके मध्य जो चंद्रमा गमन करे तो शोक, रोग, भय, दुःख देनेवाला कहिये और जो चंद्रमाके पीछे रोहिणी होवे तो स्त्रियां कामीजनोंके वशमें होवें ॥ ९७ ॥

रोहिण्याः पृष्ठतो याति यदा कुमुदिनीपतिः ॥ कामिनीनां वशं यांति नराः कामप्रपीडिताः॥९८॥

जो रोहिणीनक्षत्रके पीछे चन्द्रमा हो तो कामसे पीडित

मनुष्य कामिनियों (स्त्रियों) के वशमें हो जावें ॥ ९८॥

वह्नेर्दिशि भयमतुलं नैर्ऋत्यां दुःखसंयुता लोकाः ॥
ईशानस्थे चन्द्रे सुखबाहुल्यं च मध्यमं वाते ॥९९॥

जो रोहिणीसे अग्निकोणमें चंद्रमा हो तो भय बहुत होवे, नैर्ऋत्यमें हो तो लोकमें दुःख होवे, ईशानमें हो तो सुख बहुत होवे वायव्यदिशामें चन्द्रमा हो तो मध्यम फल जानना ॥ ९९ ॥

धरणीसुतो मन्दरहितः कांतियुतश्चन्द्रमा विनोत्पातः ॥ शुभदश्च सर्वजगतो यदि सूर्यस्तीक्ष्णरश्मिः स्यात् ॥२०० ॥ यत्फलं रोहिणीयोगे तत्स्वात्यामपि चिंतयेत् ॥ नारायणेन लिखितं वराहेण च भाषितम् ॥२०१॥

रोहिणीनक्षत्रके दिन जो मंगल और शनिवारसे रहित विना उत्पातके निर्मल रहे और दिनमें सूर्य प्रचंड तपै तो सब जगत्को शुभदायक होवे है ॥ २०० ॥ जो फल रोहिणीके योगका कहा वह स्वातिनक्षत्रके दिनभी विचा-

ना ऐसा वराहमिहिराचार्यजीने वर्णन किया और नारायणप्रसादने लिखा ॥ १ ॥

अथ स्वातिनक्षत्रविचारः ।

सप्तम्यां माघमासे यदि पतति हिमं स्वातिनक्षत्रयोगे चन्द्रार्कौ रश्मिहीनौ जलधरसहितौ वाति वातः प्रचण्डः ॥ विद्युद्युक्तं नभो वा यदि भवति तदा सर्वसस्यैरुपेता पृथ्वी स्याद्वारिपूर्णा मुदितजनपदा हृष्टलोकैश्च युक्ता ॥ २ ॥ श्रावणे फाल्गुने मासे चैत्रवैशाखयोरपि ॥ आषाढे स्वातियोगोऽयं विचार्यो दैवचिन्तकैः ॥ ३ ॥

माघवदी सप्तमीको स्वातिनक्षत्रमें जो हिम (पाला) पडे, बादल होवे और चन्द्रमा सूर्य कुहरसे ढक जायँ, पवन प्रचंड चले, वा बिजली चमके, सजल मेघ होवें तो पृथ्वीपर सब धान्य उपजें वर्षा बहुत अच्छी होवे और मनुष्यजन लोकमें आनन्दपूर्वक सुखी होवे ॥ २ ॥

यह विचार श्रावण, फाल्गुन, चैत्र, वैशाखमेंभी तथा आषाढमासमें यह स्वातियोग दैवज्ञपंडितों करके विचारना चाहिये ॥ ३ ॥

अथ मेघलक्षणम् ।

ओतुप्रेतश्वादिकाकाऽनुरूपाच्छिन्ना भिन्ना वाग्निहीनातिरूक्षाः ॥ उष्ट्राकारा वानराकारदेहा मेघाः प्रोक्ताः दुःखदा वै प्रजानाम् ॥ ४ ॥ मंजिष्टा शुककौशेयस्वर्णकौंचसमप्रभाः ॥ अच्छिन्नमूलाः सुस्निग्धाः शुभदाः सजला घनाः ॥ ५ ॥

अब मेघोंका लक्षण कहते हैं । आषाढमासमें जो बादल बिलाव, प्रेत, कुत्ता और कौआ इनके आकार छिन्न भिन्न विना बिजलीके रूखे आवे अथवा ऊँट तथा वानरकी देहके आकार होवे तो ऐसे लक्षणवाले मेघ प्रजाको दुःख देनेवाले कहे हैं ॥ ४ ॥ तथा मजीठ, सपेद रेशमी, सुवर्ण, क्रौंच पक्षी इनके समान कांतिवाले हों और नहीं कटी है मूल (जड) जिनकी ऐसे विचित्ररंगके सुन्दर चि-

कोण जल भरे हुये बादल हों तो शुभ देनेवाले होते हैं ॥ ५ ॥

शाक्रोद्भूतैर्मारुतैर्वारिवृष्टिः पृथ्वी सस्यन्या-
वृतानन्दयुक्ताः ॥ वह्न्युद्भूतैर्वह्निकोपोऽत्र
नाशो याम्यैरन्नं क्षीयते राक्षसोत्थैः ॥ ६ ॥
पश्चाज्जातैर्वारिवृष्टिः समग्रा वात्तोद्भूतैर्वातयु-
क्ता हि वृष्टिः ॥ वृष्टिः सस्यं सौम्यकाष्ठासमु-
त्थैरीशोद्भूतैर्वीतशोका जनाः स्युः ॥ ७ ॥

जो आषाढमासमें पूर्ववायु चले और वर्षा होवे तो पृथिवीपर सस्य बहुत उपजे और प्रजा आनन्दयुक्त होवे। अग्निकोणकी पवन चले तो अग्निका कोप हो, दक्षिण तथा नैर्ऋत्यकी चले तो अन्नका नाश होवे ॥ ६ ॥ पश्चिमकी पवन चले तो वर्षा अच्छी होवे, वायव्यकी पवन चले तो वायुसहित वर्षा होवे, उत्तरकी पवन चले तो वृष्टि बहुत हो, सस्य (खरीफ) अच्छी होवे, ईशानकी वायु बहे तो मनुष्योंका शोक दूर होवे ॥ ७ ॥

उल्कानिर्घातभूकम्पदिग्दाहाशनिविद्युतः ॥

नाशा मृगाणां संग्रासास्तथैवाम्बुधरास्तदा ॥ ८ ॥

उल्कापात, वज्रका शब्द, भूकंप (भूचाल), दिग्दाह, गर्जना, बिजली, मृगोंका शब्द तथा मेघोंका स्वरूप इनका विचार करै ॥ ८ ॥

अथाषाढपूर्णिमायां पवनपरीक्षा ।

आषाढमासस्य च पूर्णिमायां सूर्यास्तकाले यदि वाति वातः ॥ पूर्वस्तदा सस्ययुता धरित्री नन्दन्ति लोकाः सजला घनाः स्युः ॥ ॥ ९ ॥ कृशानुवाते मरणं प्रजानामन्नस्य नाशः खलु वृष्टिनाशः ॥ याम्ये मही सस्यविवर्जिता स्यात् परस्परं यान्ति नृपा विनाशम् ॥ २१० ॥

आषाढमासकी पूर्णिमाके दिन सूर्यास्तसमयमें जो पूर्वकी पवन चलै तो पृथिवीपर तृण बहुत उपजै लोकमें आनन्द होवे, वर्षा अच्छी हो ॥ ९ ॥ अग्निदिशाकी पवन चलै तो प्रजाका मरण, अन्नका नाश व वर्षाका

विनाश होवे, दक्षिणकी वायु वहे तो पृथिवीपर तृण नहीं उपजे और राजालोग परस्पर युद्ध करके नाशको प्राप्त होवे ॥ २१० ॥

नैशाचरो वाति यदात्र वातो न वारिदो वर्षति भूरि वारि ॥ प्रत्यक्समीरे सुखिनो मनुष्या जलान्नपूर्णा च वसुंधरा स्यात् ॥११॥
वायव्यवाते जलदागमे स्यादभ्रस्य नाशः पवनैः प्रचंडैः ॥ सौम्येऽनिले धान्यजलाकुला धरा नन्दन्ति लोका भयदुःखवर्जिताः ॥ १२ ॥

जो नैर्ऋत्यकी वायु वहे तो बहुत जल नहीं वर्षे, पश्चिमकी पवन चले तो मनुष्य सुखी होवें और पृथिवी जल अन्नसे पूर्ण होवे ॥ ११ ॥ वायव्यकी वायु वहे तो मेघोंके आनेसे प्रबल वायु चले जिससे बादल उडजावें, उत्तरकी पवन चले तो पृथिवीपर अन्न जल बहुत होवे और लोकमें प्रजागण आनन्दयुक्त हो तथा भय और दुःखरहित हो जावें ॥ १२ ॥

ऐशेऽन्नवृद्धिर्बहुवारिपूरिता धरा च गावो बहु-
दुग्धसंयुताः ॥ भवंति वृक्षाः फलपुष्पदायि-
नो नन्दन्ति भूपाश्च परस्परं तदा ॥ १३ ॥

ईशानकी वायु बहे तो अन्नकी वृद्धि हो और जल बहुत बर्षे, गौएं बहुत दूधसे युक्त होवें और वृक्षोंमें फल फूल अच्छे होवें, तथा उस समयमें राजालोग परस्पर आनन्द करें ॥ १३ ॥

अथ श्रावणमासफलम् ।

श्रावणे शुक्लसप्तम्यां यदि मेघः प्रवर्षति ॥
तदा प्रजाश्च नन्दन्ति धनधान्याकुला धरा ॥ १४ ॥
सप्तम्यां श्रावणे मासि स्वातियोगे च वर्षति ॥
निष्पत्तिः सर्वसस्यानां भवन्ति सुखिनो जनाः १५

अब श्रावणमासका फल कहते हैं । श्रावणशुदी सप्तमीके दिन जो मेघ बर्षे तो प्रजागण सुखी होवे और पृथिवीपर धन धान्य बहुत हो ॥ १४ ॥ तथा श्रावणशुदी सप्तमी-

के दिन स्वातिनक्षत्रमें जो वर्षा हो तो सब तृणधान्य उ-
पजैं और मनुष्य सुखी होवैं ॥ १५ ॥

श्रावणेऽस्तंगते भानौ सतम्यां शुक्लपक्षके ॥
दृश्यते न च पर्जन्यस्तदा मेघो न वर्षति ॥ १६ ॥
चित्रास्वातिविशाखासु यदि मेघो न वर्षति ॥
श्रावणे च तदा पृथ्वी वारिसस्यविवर्जिता ॥ १७ ॥

श्रावणशुदी सप्तमीके दिन सूर्यास्तसमय पीछे जो मेघ
नहीं दीख पडे तो वर्षा नहीं होवै ॥ १६ ॥ तथा श्रावणमास
चित्रा, स्वाति, विशाखा इन नक्षत्रोंमें यदि मेघ नहीं वर्षे
तो पृथिवीपर जल नहीं वर्षे और तृण नहीं उपजै ॥ १७ ॥

श्रावणे कृत्तिकायां च यदि मेघः प्रवर्षति ॥
तदा त्वेकार्णवा पृथ्वी धनधान्याकुला प्रजा ॥ १८ ॥
श्रावणस्य सिते पक्षे पूर्वाभाद्रपदासु च ॥
चतुर्थ्यां जलपातश्चेत्पृथ्वी स्यादन्नसंकुला ॥ १९ ॥
श्रवणर्क्षे पूर्णिमायां यदि मेघः प्रवर्षति ॥
तस्मिन्काले सुभिक्षं स्याद्धरित्री चान्नसंकुला ॥ २० ॥

श्रावणमासमें कृत्तिकानक्षत्रके दिन जो मेघ वर्षे तो पृथिवी जलमयी हो जावे और प्रजा धनधान्यसे युक्त होवे ॥ १८ ॥ श्रावणके शुक्लपक्षमें पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रमें अथवा चतुर्थीतिथिमें जो जल गिरे तो पृथिवीपर अन्न बहुत होवे ॥ १९ ॥ श्रावणीपूर्णमासीको श्रवणनक्षत्रमें जो मेघ मर्षे तो सुभिक्ष (सस्ता) होवे और पृथिवीपर अन्न बहुत होवे ॥ २२० ॥ यह श्रावणमासका फल कहा ॥

अथ भाद्रपदमासफलम् ।

नभस्यसप्तमी कृष्णा रोहिणीमन्दसंयुता ॥
गुरुशुक्रार्कयुक्ता वा यवगोधूमशालयः ॥ २१ ॥
हरिद्रा जीरकं सीसं पारदं हिंगुमेक्षवम् ॥
तिलं कस्तूरिका चैव महर्घंति न संशयः ॥
गते मासे तृतीये तु विक्रीये लाभमादिशेत् ॥२२॥

भाद्रकृष्णसप्तमीको रोहिणी नक्षत्र हो और शनिवार वा गुरु, शुक्र, रवि यह वार हों तो जौ, गेहूं, चावल ॥ २१ ॥ हल्दी, जीरा, सीसा, पारा, हींग, सहत, तिल,

कस्तूरी यह वस्तु महँगी होवै, इसमें सन्देह नहीं । इसका संग्रह करे तीसरे महीनेमें बेचनेसे विशेष लाभ होवै ॥ २२ ॥

नभस्यस्य- तृतीयायां प्रहरे च तृतीयके ॥ २३ ॥
उत्तरस्यां घना दृष्टास्तदा स्युः सुखिनो जनाः ॥
अन्नसंग्रहणं कार्य्यं षष्ठ मासि महर्घता ॥ २४ ॥

भाद्रकृष्णतृतीयाको तीसरे प्रहरमें ॥ २३ ॥ जो उत्तरदिशाकी ओर बादल दीख पड़ें तो मनुष्य सुखी होवैं अन्नका संग्रह करे छठे महीनेमें महँगा होवे ॥ २४ ॥

भाद्रे मास्यष्टमी शुक्ला मूलचन्द्रार्कसंयुता ॥
तदा च पंचमे मासि शणसूत्रमहर्घता ॥ २५ ॥
यदा भाद्रपदे मासि संक्रान्तौ जलवर्षणम् ॥
तदा भवन्ति रोगाश्च प्राणिनां चाश्विने भयम् ॥२६॥

भाद्रशुदी अष्टमीको मूलनक्षत्र हो और चन्द्रवार अथवा रविवार हो तो पाँचवें महीनेमें सन और सूत महँगा होवै ॥ २५ ॥ जो भाद्रमासमें संक्रांतिके दिन जल

वर्षे तो प्राणियोंको अनेक रोग होवें और आश्विन (कुँवार) के महीनेमें जीवोंको भय होवे ॥ २६ ॥
अमावास्या भाद्रपदे युक्ता स्याद्भानुना यदि ॥
तदा महर्घता ज्ञेया सस्यानां दैवचिन्तकैः ॥ २७ ॥
जो भादौं अमावास्याके दिन रविवार होवै तो तृण धान्य महँगा होवै ऐसा दैवज्ञों करके जानना ॥ २७ ॥

अथ आश्विनमासफलम् ।

आश्विनस्य त्रयोदश्यां शनिवारो यदा भवेत् ॥
यदि संक्रमणं तत्र रवेः सस्याकुला मही ॥ २८ ॥
आश्विने शनिवक्रं स्याद्बुधो राश्यंतरं व्रजेत् ॥
शुक्रश्चास्तमयं याति तदान्नप्लाविता धरा ॥ २९ ॥
जो आश्विनमासमें त्रयोदशीको शनिवार होवै और संक्रान्तिभी उस दिन लगे तो पृथिवीपर सस्य बहुत होवै ॥ २८ ॥ तथा जो आश्विनमासमें शनि वक्री होवै और बुध दूसरी राशिमें जावै, शुक्रका अस्त होवै तो अन्नसे पृथिवी पूरित होवै अर्थात् अन्नादिक बहुत होवै ॥ २९॥

शनिराहोश्च तत्रैव संचारो जायते यदि ॥
तैलसूत्रशणादीनां तदा वाच्या महर्घता ॥ ३० ॥
आश्विने शुक्लसप्तम्यामष्टम्यां वारिवर्षणम् ॥
तदा सुभिक्षमादेश्यं राजानः शांतिविग्रहाः ॥ ३१॥

आसौजमासमें शनि, राहुकाभी जो संचार हो अर्थात् दूसरी राशिपर जाय तो तेल, सूत, सन यह वस्तु महँगी होवें ॥ ३० ॥ आसौजशुदी सप्तमी वा अष्टमीके दिन वर्षा होवे तो सुभिक्ष (सस्ता) होवे राजाओंका विग्रह शांत (दूर) होवे ॥ ३१ ॥

यदा चाश्विुजे मासि दशम्यां प्रतिपत्तिथौ ॥
अष्टम्यामाम्बरेन्मेघः सत्वरं वृष्टिकारकः ॥ ३२ ॥
आदित्यास्तमये मेघाः पर्वताकारसन्निभाः ॥
दृश्यन्ते जलपातः स्यात्तस्मिन्नेव दिने तदा॥३३॥

जो आसौजमासमें दशमी, प्रतिपदा, अष्टमीको बादल हो तो शीघ्रही वर्षा होवे ॥ ३२॥ जो कुँवारमें सूर्यास्तसमय मेघ पर्वताकार होंय तो उसी दिन वर्षा होवे॥ ३३॥

अथ कार्तिकमासफलम् ।

कार्तिके मार्गशीर्षे वा संक्रान्तौ वारिवर्षणम् ॥
तदा समघेता पौषे सस्यवृद्धिस्तु मध्यमा ॥३४ ॥
कार्तिकस्य ह्यमावास्या रविवारेण संयुता ॥
शनिभौमयुता वापि सर्वलोकभयावहा ॥ ३५ ॥

कार्तिक वा मार्गशिरमासमें संक्रान्तिके दिन जो वृष्टि होवे तो पौषमासमें अन्न सस्ता हो और सस्यकी मध्यम वृद्धि होवे ॥ ३४ ॥ कार्तिककी अमवास्याको रविवार हो वा शनि, भौमवार हो तो सब लोकोंमें भय होवे॥ ३५॥

तत्र चेद्रविसंक्रान्तिस्तत्समीपेऽथ वा भवेत् ॥
तदा सुखयुता लोकाः सर्वसस्यमहर्घता ॥ ३६ ॥
यदा कार्तिकमासे तु वारिदस्य च गर्जनम् ॥
भवत्यन्नमहर्घत्वं सस्यसम्पत्तिरुत्तमा ॥ ३७ ॥

तहाँ जो सूर्यकी संक्रांति हो अथवा उस दिनके समीप संक्रांति हो तो लोकमें सब सुखी रहें और सब सस्य (तृणधान्य) महँगे हों ॥ ३६ ॥ तथा जो कार्तिकमा-

समें मेघ गरजै तो अन्न महँगा हो और सस्य बहुत उत्तम होवै ॥ ३७ ॥

ऊर्जस्य शुक्लद्वादश्यां रजनी निर्मला यदि ॥
पूर्णिमा कृत्तिकायुक्ता तदा लोकाः सुखान्विताः ३८
अथ वा भरणी सर्वा कार्तिक्यां भवति ध्रुवम् ॥
दुर्भिक्षं जायते घोरं तथा रोगा भवंति हि ॥ ३९ ॥

कार्तिकशुक्लद्वादशीको जो रात्रि निर्मल रहे और पूर्णिमाके दिन कृत्तिका नक्षत्र हो तो लोकोंमें सुख होवै॥ ३८॥ अथवा पूर्णिमाको भरणी नक्षत्र होवे तो निश्चय दुर्भिक्ष (अकाल) घोर हो तथा रोग होवैं ॥ ३९ ॥

तस्यामेवाश्विनीयोगे सस्यसम्पच्च मध्यमा ॥
यदि चेद्रोहिणीयोगे जन्तवः क्लेशभागिनः ॥ २४० ॥

तथा जो पूर्णमासीको अश्विनी नक्षत्र हो तो सस्य (तृण) मध्यम होवे और जो रोहिणी हो तो प्राणियोंको क्लेश होवै ॥ २४० ॥

यदा कार्तिकमासे तु ग्रहणं चन्द्रसूर्ययोः ॥

निर्घातो भूमिकंपश्च तारकापतनं तथा ॥ ४१ ॥
उल्कापातो रजःपातो ह्यनभ्रे जलवर्षणम् ॥
एते चान्ये तथोत्पाताः प्रभवंति पुरोदिताः ॥ ४२ ॥
संग्रहः सर्वधान्यानां कर्तव्यो धनकांक्षिभिः ॥
विक्रीते पंचमे मासि लाभश्च द्विगुणो भवेत् ॥४३॥

जो कार्तिकमासमें चन्द्र सूर्य ग्रहण होवे, बिजली गिरैं, भूकंप हो तथा तारे टूटैं ॥ ४१ ॥ उल्कापात हों, धूलकी वर्षा हो, बिना बादलके वर्षा हो, यह उत्पात हों, इनसे अन्यभी उत्पात हैं ॥ ४२ ॥ तो धनलाभकी इच्छावाला मनुष्य सब धान्योंका संग्रह करे पाँचवें महीनेमें बेचनेसे दूना लाभ होवे ॥ ४३ ॥

अथ मार्गशीर्षमासफलम् ।

मार्गशीर्षे चतुर्दश्यां दर्शे वा दृश्यते यदा ॥
घनैराच्छादितो भानुस्तदा सस्यमहर्घता ॥ ४४ ॥
मार्गशुक्लद्वितीयायां शनिवारोऽथ दक्षिणः ॥
वातो वहति लोकानां तदा कष्टप्रदायकः ॥ ४५ ॥

मार्गवदी चतुर्दशी वा अमावास्याके दिन जो बादलोंसे ढका भया सूर्य दीख पडे तो तृण महँगा होवै ॥ ४४ ॥ मार्गशुदीद्वितीया शनिवारको दक्षिणदिशाकी वायु वहे तो लोकमें प्राणियोंको कष्ट देनेवाली जानना ॥ ४५ ॥

मार्गशीर्षादिमासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः ॥
छत्रभंगं प्रजापीडा दुर्भिक्षं च समादिशेत् ॥ ४६ ॥
मार्गशीर्षे कृष्णपक्षे तिथिवृद्धिश्च जायते ॥
तदा युद्धाकुला पृथ्वी प्रजाः क्रन्दन्ति नित्यशः॥४७॥

जो मार्गशीर्ष आदि महीनोंमें शुक्लपक्षमें तिथिक्षय होवै तो छत्रभंग प्रजाको पीडा और दुर्भिक्ष (महँगा) होवै ॥ ॥ ४६ ॥ मार्गशीर्ष कृष्णमें तिथिकी वृद्धि होवै तो पृथिवीपर युद्ध हो और प्रजा नित्य रुदन करै ॥ ४७ ॥

मार्गशीर्षस्य सप्तम्यां नवम्यामाशुदिग्यदि ॥
दृश्यते मेघसंछन्ना स्तोकं वर्षति वारिदः ॥ ४८ ॥
मार्गकृष्णचतुर्थ्यां च पित्रर्क्षे मेघदर्शनम् ॥
अथवा जलपातः स्यात्तदाषाढे च वर्षणम् ॥

समर्घता च सस्यानामादेश्या गणकोत्तमैः ॥ ४९ ॥

मार्गशीर्षकी सप्तमी तथा नवमीको जो ईशानदिशामें बादल होवें तो वर्षा थोडी होवे ॥ ४८ ॥ मार्गवदीचतुर्थीको और मघानक्षत्रमें जो मेघ दीख पडे अथवा जल गिरे तो आषाढमें वर्षा होवे ॥ और तृणधान्य सस्ता होवे ऐसा उत्तम ज्योतिषियोंकरके कहना चाहिये ॥४९॥

चतुर्थी सार्पसंयुक्ता पंचमी पितृसंयुता ॥ २५० ॥
षष्ठी च भगसंयुक्ता मार्गे मासि यदा भवेत् ॥
त्रिरात्रं महती वृष्टिराषाढे शुक्लपक्षके ॥ ५१ ॥

मार्गवदी चतुर्थीको आश्लेषा नक्षत्र हो, पंचमीको मघा हो ॥ ५५० ॥ और षष्ठीको पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र हो तो आषाढके शुक्लपक्षमें तीन रात बहुत वर्षा होवै ॥ ५१ ॥

मार्गकृष्णाष्टमी स्वातिचित्रायुक्ता भवेद्यदि ॥
मेघाक्रांतं नभस्तस्यां दृश्यते सर्वदा यदि ॥ ५२ ॥
तस्मिन्नृक्षे तदाषाढे जायते वृष्टिरुत्तमा ॥
सर्वसस्ययुता पृथ्वी प्रजा नन्दन्ति नित्यशः ॥५३॥

जो मार्गशीर्षबदी अष्टमीको स्वाति वा चित्रा नक्षत्र हो और सब दिनभर बादल रहें ॥ ५२ ॥ तो आषाढमासमें चित्रा स्वाति नक्षत्रके दोनों दिन बहुत वर्षा होवे, पृथिवीपर सस्य सब उत्पन्न हो प्रजामें नित्य आनंद होवे॥५३॥

अष्टमी चापि नवमी चित्रयुक्ता यदा भवेत् ॥
वायुभे च तदाषाढे मेघा वर्षन्ति नित्यशः ॥ ५४ ॥

मार्गबदी अष्टमी वा नवमीको चित्रा नक्षत्र हो तो आषाढमें स्वातिनक्षत्रके दिन बहुत वर्षा होवे ॥ ५४ ॥

अथ पौषमासफलम् ।

पौषस्य च तथा कृष्णा पंचमी भौमसंयुता ॥
तस्यां मेघाः प्रवर्षन्ति तदा धान्याकुला मही ॥
अतसीघृतमंजिष्ठा वर्षे याति महर्घताम् ॥ ५५ ॥

अथ पौषमासका फल कहते हैं, पौषके कृष्णपक्षकी पंचमी मंगलके दिन जो मेघ वृष्टि करे तो पृथिवीपर अन्न बहुत उपजे। और अलसी, घी, मंजीठ यह वस्तु उस वर्षमें महँगी हो जावें ॥ ५५ ॥

पूर्वाभाद्रपदा पौषे विशेषेण निरीक्षयेत् ॥ ५६ ॥
परिवेषो गर्जनं च विद्युद्वारिप्रवर्षणम् ॥
यदि तत्र प्रजायन्ते तदा वृष्टिरथोत्तमा ॥ ५७ ॥

पौषमासमें पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रके दिन सावधानतापूर्वक देखै ॥ ५६ ॥ तहां जो सूर्यचन्द्रमंडलमें परिवेप हो मेघ गरजै वा बिजली कडके तथा जल वर्षे तो वर्षाकालमें वृष्टि उत्तम होवे ॥ ५७ ॥

एकादश्यां नवम्यां च पौषमासे घना यदि ॥
पूर्वस्यां दिशि गर्जन्ति तदा सस्यविनाशकः ॥५८॥
पौपकृष्णस्य सप्तम्यां वारिवाहा महानिशि ॥
यदा वर्षन्ति गर्जन्ति तदा स्याद्वृष्टिरुत्तमा ॥ ५९ ॥

पौषवदी एकादशी और नवमीको जो पूर्वदिशामें मेघ गरजैं तो तृणका विनाशक होवै ॥ ५८ ॥ जो पौषवदी सप्तमीको अर्धरात्रिसमय मेघ वर्षा करैं तथा गरजैं तो वर्षासमयमें वृष्टि उत्तम हो ॥ ५९ ॥

पौषस्य यद्यमावास्या ज्येष्ठानक्षत्रसंयुता ॥

तदा सस्यमहर्घत्वं मूलयुक्तात्पमूल्यता ॥ २६० ॥
शुक्ला त्रयोदशी पौषे मन्दशुक्रकुजैर्युता ॥
यदि वर्षति जीमूतः कार्यो गोधूमसंग्रहः ॥ ६१ ॥

जो पौषकी अमावास्याको ज्येष्ठानक्षत्र हो तो तृण धान्य महँगे हों मूलनक्षत्र हो तो सस्ते होवें ॥ २६० ॥ जो पौषमासकी त्रयोदशीको शनि, शुक्र वा मंगलवार होवे और मेघ वर्षे तो गेहूँका संग्रह करनेसे विशेष लाभ होवै ॥ ६१ ॥

पौषशुक्लचतुर्थ्यां तु विद्युदर्शनमुत्तमम् ॥
तदा विद्युद्घनच्छन्नं दृष्टमिन्द्रधनुस्तथा ॥ ६२ ॥
धनुर्विद्युद्घनो वापि यद्येकमपि नो भवेत् ॥
पौषमासे तथा वाच्यं वर्षाकाले ह्यवर्षणम् ॥६३ ॥

जो पौषशुदी चतुर्थीको बिजली दीख पडै तो उत्तम फल होवे तथा बिजली तडपै, बादल होवै, इन्द्रधनुष दीख पडै ॥६२॥ अथवा पौषमासमें पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रके दिन बिजली चमके, धनुष उगै तो वर्षाकालमें अवर्षण होवे६३

पौषे मासे शुक्लपक्षे पंचम्यां हिमवर्षणम् ॥
तदा स्यान्महती वृष्टिः प्रावृट्काले न संशयः॥६४॥
पौषस्य सप्तमी शुक्ला रेवतीसंयुता यदा ॥
अष्टम्यामश्विनीयोगो नवम्यां भरणी यदा ॥ ६५ ॥
एवंविधेषु योगेषु सविद्युद्घनदर्शनम् ॥
तदा स्यान्महती वृष्टिर्वर्षाकाले न संशयः ॥ ६६ ॥

पौषमासशुक्लपक्षमें पंचमीको जो हिम (कुहर) पडै तो निःसन्देह वर्षाकालमें बहुत वृष्टि होवै ॥ ६४ ॥ तथा पौषशुदी सप्तमीको रेवती नक्षत्र हो, अष्टमीको अश्विनी नक्षत्र हो, नवमीमें भरणी नक्षत्र हो ॥ ६५ ॥ इस प्रकारके योगमें बिजली चमके, बादल हो तो वर्षाकालमें बहुत वृष्टि होवे; इसमें संशय नहीं करना॥ ६६ ॥

एकादश्यां यदा विद्युद्रोहिण्यां जलदर्शनम् ॥
पौषे यदा तदा वृष्टिः प्रावृषि स्यात्समर्घता ॥ ६७ ॥
पूर्णिमायां द्वितीयायां पौषे विद्युत्प्रदर्शनम् ॥
तदा स्यादन्नसम्पत्तिर्मेघच्छन्ने तथांबरे ॥ ६८ ॥

पौषशुदी एकादशीको बादल हो, बिजली कडके, रोहिणी नक्षत्रमें जल होवे तो वर्षाकालमें वृष्टि हो और अन्न सस्ता होवै ॥ ६७ ॥ तथा पौषमें पूर्णमासी तथा द्वितीयाको बादल व बिजली दीख पडे तो अन्न बहुत उपजे वर्षाभी अच्छी होवे ॥ ६८ ॥

पौषमासेऽर्कसंक्रांतौ रविवारो यदा भवेत् ॥
धान्यमूल्यं द्विगुणितं तदा भवति नान्यथा ॥ ६९ ॥
शनिवारे त्रिगुणितं भूमिपुत्रे चतुर्गुणम् ॥
बुधभृग्वोः समत्वं च तुल्यार्द्धं शशिजीवयोः २७०॥

पौषमासमें संक्रान्तिके दिन जो रविवार होवे तो वर्तमान मूल्यसे दूना मोल हो जावे इसमें अन्यथा नहीं ६९, शनिवार हो तो तिगुना, मंगलवार हो तो चौगुना, बुध, शुक्र हों तो समान भाव रहे, चन्द, गुरुवार हो तो वर्तमान मौल्यसे आधा मौल्य रहे अर्थात् सस्ता होवे ॥ २७० ॥

अत्र मासेऽर्कसंक्रान्तिः शनिभानुकुजेऽहनि ॥
तदा भवति दुर्भिक्षं तथा स्याद्राजविग्रहः ॥ ७१ ॥

मूलमारभ्य याम्यांतं नभो भवति साभ्रकम् ॥
रौद्रमारभ्य वातांतं तदा वर्षति वासवः ॥ ७२ ॥

पौषमासमें तथा यहाँ किसी मासमें सूर्यकी संक्रान्ति शनि, सूर्य, मंगलवारको हो तो दुर्भिक्ष (अकाल) तथा राजाओंमें विग्रह होवे ॥ ७१ ॥ पौषमासमें जो मूलनक्षत्रसे लेके भरणीनक्षत्रतक जो बादल होवें तो वर्षाकालमें आर्द्रासे लेके स्वाति नक्षत्रके सूर्यतक वर्षा होवे ७२॥

धनराशिगते भानौ मूलमारभ्य चिंतयेत् ॥
गर्भाधानं ततो वृष्टिः षष्ठे मासे हि सार्धके ॥ ७३ ॥
मूलर्क्षे हि यदा गर्भो भवत्यार्द्रा च वर्षति ॥
पूर्वाषाढे तथादित्यमुत्तरायां तथा गुरुः ॥ ७४ ॥

धनराशिकी संक्रान्तिमें मूलनक्षत्रको आदि लेके गर्भाधान अर्थात् सजलमेघोंका विचार करे जिससे साढे छः महीनोंमें अर्थात् आषाढकृष्णपक्षमें वृष्टिको विचारे सो क्रम आगेके श्लोकोंमें वर्णन करते हैं ॥ ७३ ॥ पौषमासमें जो मूलनक्षत्रके दिन गर्भ अर्थात् मेघ वर्षे तो वर्षा-

कालमें आर्द्रानक्षत्र वृष्टि करे तथा पूर्वाषाढामें मेघ हो तो पुनर्वसुके सूर्यमें वर्षा होवै, उत्तराषाढामें मेघ हो तो पुष्यमें अच्छी वृष्टि होवै ॥ ७४ ॥

श्रवणे सार्पभे चैव वासवे पितृभं तथा ॥
वारुणे भाग्यभं चैव पूर्वाभाद्रार्यमाश्विवे ॥ ७५ ॥
हस्तो वर्षत्युत्तरायां रेवत्यां वार्धकिस्तथा ॥
एतद्भं समासेन मयोक्तं चिन्तयेत्सुधीः ॥ ७६ ॥

श्रवणनक्षत्रमें जो मेघ हो तो आश्लेषाके सूर्यमें वर्षा होवै, धनिष्ठामें गर्भ हो तो मघा वर्षे तथा शतभिषामें मेघ होनेसे पूर्वमें वर्षा होवै, पूर्वाभाद्रपदामें गर्भ हो तो उत्तराफाल्गुनीके सूर्यमें अच्छी वर्षा होवै ॥ ७५ ॥ उत्तराभाद्रपदामें मेघ हो तो हस्तके सूर्यमें वर्षा होवै, रेवतीमें गर्भ हो तो चित्रास्वातिके सूर्यमें वृष्टि होवै, यह मैंने संक्षेप करके कहा जो गर्भविचार सो बुद्धिमान् पंडित विचार लें ॥ ७६ ॥

तुरगर्क्षे गते भानौ यदि मेघः प्रवर्षति ॥
मूलोद्भवं तदा गर्भं नादेद्यं दैवचिन्तकैः ॥ ७७ ॥

भरण्यादिस्थिते भानौ यस्मिन्मेघः प्रवर्षति ॥
तस्मिन् तस्मिन् गर्भऋक्षे गर्भनाशं वदेद्बुधः ७८ ॥

अश्विनीनक्षत्रके सूर्य प्रवेश समय वर्षा हो तो मूल नक्षत्रमें कहा गया गर्भ फल नहीं होवे ऐसे दैवज्ञों करके जानना ॥७७॥ एवं भरणी आदिके सूर्यमें जिस नक्षत्रके सूर्यमें वर्षा होवे उस उस नक्षत्रानुसार गर्भ फल नाश होवे ऐसा पंडित जन विचार कर कहे, जैसे भरणीके सूर्य-में मेघ वर्षे तो पूर्वाषाढाका गर्भ फल न हो, ऐसेही आगे यथाक्रमसे विचारे ॥ ७८ ॥

पौषस्य पंचदश्यां च विधोर्याम्योत्तरा तडित् ॥
दृश्यते वियदाच्छन्नं घनैर्वृष्टिस्तदा भवेत् ॥ ७९ ॥
पौषे स्वात्यां च सप्तम्यां यदा स्याद्धारिवर्षणम् ॥
मेघच्छन्नं नभो वापि तदा सस्याकुला धरा ॥ ८० ॥

पौषमासकी पौर्णमासीके दिन जो चन्द्रमाके दक्षिण उत्तरमें बिजली चमके और सजल मेघ घिर आवें तो

उस दिन जो नक्षत्र हो सो नक्षत्र वर्षाकालमें वृष्टि करै ॥ ७९ ॥ पौषमासमें सप्तमी तिथि वा स्वातिनक्षत्रके दिन वर्षा होवे तो तृण धान्य बहुत उपजे ॥ २८० ॥

कुह्वन्तासु त्रितिथिषु पौषे गर्भः प्रजायते ॥
तदा सुभिक्षमारोग्यं श्रावण्यां वारिवर्षणम्॥ ८१॥
अमावास्या सहस्यस्य शनिसूर्यारवासरे ॥
यदि स्याद्भयमादेश्यं तदा सस्यमहर्घता ॥ ८२ ॥

पौषमासमें अमावास्यातक तीन तिथियोंमें अर्थात् १३ । १४ । ३० इन तिथियोंमें जो गर्भ होवे तो सुभिक्ष और आरोग्यता होवे तथा श्रावणीके दिन वर्षा होवे ॥ ८१ ॥ पौषकी अमावास्याको जो शनि, सूर्य, मंगल वार हो तो भय उपजे और तृण महँगा होवे ॥ ८२ ॥

पौषमासस्य कुह्वां वा सप्तम्यां यदि वर्षणम् ॥
प्रावृट्काले तदा तत्र समयं वारिवर्षणम् ॥ ८३ ॥
शुक्लायां यदि सप्तम्यां घनैराच्छादितं नभः ॥
तदा स्याच्छ्रावणे मासि सप्तम्यां वृष्टिरुत्तमा ॥८४॥

पौषमासकी अमावास्या वा सप्तमीके दिन जो वृष्टि होवै तो वर्षाकालमें सस्ता होवै और फल बहुत वैषे ॥ ८३ ॥ तथा पौषशुदी सप्तमीके दिन जो बादल होवें तो श्रावण शुदी सप्तमीको उत्तम वृष्टि होवै ॥ ८४ ॥

पौषस्य कृष्णपंचम्यां नभो विमलतारकम् ॥
स्वात्यां तुषारपातः स्याच्छ्रावणे तत्र वर्षणम् ॥८५॥
प्रजा भवन्ति मुदिताः सर्वसस्यसमर्घता ॥
एवं संचिन्त्य दैवज्ञः पौषमासफलं वदेत् ॥ ८६ ॥

पौषकृष्ण पंचमीको जो आकाश निर्मल रहे और स्वातिनक्षत्रमें तुषार (कुहर) पडे तो श्रावणमासमें वर्षा विशेष होवै ॥८५॥ और प्रजागण प्रसन्न होवें, सब तृण सस्ते हों, इस प्रकार विचार कर दैवज्ञ पौषमासका फल कहे ॥ ८६ ॥

अथ माघमासफलम्

माघशुक्लद्वितीया च तृतीया शुक्रसंयुता ॥
यदा स्यान्मंदसंयुक्ता तदा युद्धाकुला धरा ॥ ८७ ॥

यदि स्याद्गुरुसंयुक्ता तदा सस्याकुला धरा ॥
राजानस्तत्र सुखिनः प्रजा नन्दन्ति नित्यशः ॥८८॥

माघशुदी द्वितीया वा तृतीयाको शुक्रवार हो तो समय अच्छा हो और जो शनिवार हो तो पृथिवीपर युद्ध होवे ॥ ८७ ॥ यदि बृहस्पति होवे तो तृण बहुत उपजे और राजा लोग सुखी होवें, प्रजामें नित्यही आनन्दता होवे ॥ ८८ ॥

षष्ठी च पंचमी चैव कृष्णा माघस्य सप्तमी ॥
शुक्रार्किरविसंयुक्ता तदा युद्धाकुला धरा ॥ ८९ ॥
एते योगा यदा माघे न भवन्ति कदाचन ॥
भाद्रमासे च गोधूममुद्गधान्यमहर्घता ॥ २९० ॥

माघकृष्णषष्ठी पंचमी और सप्तमीको शुक्र, शनि, रविवार हो तो पृथिवीपर युद्ध बहुत होवे ॥ ८९ ॥ जो माघमासमें यह योग नहीं होवे तो भाद्रपदमासमें गेहूं, मूंग अन्न ये वस्तु महँगी होंवे ॥ २९० ॥

माघमासे त्रयोदश्यां यदा स्याद्धिमवर्षणम् ॥

पृथ्वी तदान्नबहुला प्रजाः सुखसमन्विताः ॥ ९१
हिमं न पतितं मासे ज्येष्ठे मूले च वर्षति ॥
नार्द्रायां पतित वारि कालो दुष्टस्तदा मतः ॥९२॥

जो माघमासकी त्रयोदशीके दिन कुहर पडै तो पृ-
थ्वीपर अन्न बहुत उपजै और प्रजा सुखी रहे ॥ ९१ ॥
जो माघमें हिम न गिरे तो ज्येष्ठमासमें मूल नक्षत्रके दिन
वर्षा होवे तो आर्द्रानक्षत्रके सूर्यमें जल नहीं गिरे और
समय अच्छा नहीं होवे ॥ ९२ ॥

माघमासे च संक्रांतौ यदि वर्षति वारिदः ॥ ९३ ॥
माघशुक्लप्रतिपदि बुधवारो यदा भवेत् ॥
अन्नं महर्घतां याति वर्षे त्वागामिके भवेत् ॥ ९४ ॥

माघमासमें संक्रांतिके दिन जो वर्षा होवे तो पृथिवी-
पर तृण बहुत उपजे, गौएं दूध बहुतसा देवें ॥ ९३ ॥
माघशुदीप्रतिपदाको जो बुधवार हो तो आगे वर्षमें भय
होवे और अन्न महँगा होवे ॥ ९४ ॥

पंचार्काः पंच वा भौमाः पंच वा मंदवासराः ॥
दुर्भिक्षं भयमादेश्यं तदा शेषाः शुभावहाः ॥ ९५ ॥
येषु येषु च मासेषु तस्य वृद्धिः प्रजायते ॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं तेषु ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ९६ ॥

माघमासमें पांच रविवार वा पांच भौमवार वा पांच शनिवार हों तो दुर्भिक्ष और भय होवे, शेष वार पांच हों तो शुभ जानना ॥९५॥ जिस महीनेमें पांच शुभ वार हों सो सुभिक्ष क्षेम आरोग्यता होवै, ऐसा पंडितोंकरके जानना ॥ ९६ ॥

माघमासस्य प्रतिपत्सवाता मेघवार्जेता ॥
यदा याति महर्घत्वं तैलद्रव्यं सुगन्धकम् ॥ ९७ ॥
द्वितीया मेघसंयुक्ता धनधान्यविवृद्धिदा ॥
माघे मासि तृतीयायां गर्जनं च जलं विना ॥ ९८ ॥
संग्रहस्तत्र कर्तव्यो गोधूमस्य यवस्य च ॥
चतुर्थी जलसंयुक्ता नालिकेरार्घदो मतः ॥ ९९ ॥

माघमासकी प्रतिपदाको जो वायु चले और मेघ वर्षे तो

तेल और सुगंधवस्तु महँगी हों ॥ ९७॥ तथा जो द्विती याको बादल हो तो धन्यधान्यकी वृद्धि हो, तृतीयाको जो बिना वर्षा होनेके गरजै ॥ ९८ ॥ तो गेहूँ और यवका संग्रह करनेसे लाभ होवे तथा चतुर्थीको मेघ बरसे तो नारियलसे द्रव्यका लाभ होवै ॥ ९९ ॥

पंचमी मेघसंयुक्ता यदा जलविवर्जिता ॥
तदा भाद्रपदे मासि स्वल्पवृष्टिश्च जायते ॥ ३०० ॥
षष्ठ्यां निरभ्रं गगनं दिशश्च विमला यदा ॥
संग्रहस्तत्र कर्तव्यः कार्पासस्य हितैषिणा ॥ १ ॥

माघमें पंचमीको जो बादल हो और जल न वर्षे तो भाद्रमासमें थोडी वृष्टि होवै ॥ ३०० ॥ तथा छठिको जो बादल न हो और दिशा आकाश निर्मल रहें तो अपने लाभकी इच्छावाला कपासका संग्रह करे ॥ १ ॥

सप्तमी सोमसंयुक्ता राजविग्रहकारिका ॥
मासे धवलपक्षस्य महादुर्भिक्षदायिका ॥ २ ॥
आदित्योदयवेलायां यदा स्यादष्टमी तिथिः ॥

दा रौद्रगते सूर्ये श्रावणे नहि वर्षति ॥ ३ ॥

माघवदीसप्तमीको जो सोमवार हो तो राजाओंका बैगाड हो, तथा शुदी सप्तमीको जो सोमवार हो तो बडा अकाल पडे ॥ २ ॥ माघमें सूर्योदयसमय अष्टमी तिथि हो, जितनी हो उतनीही तिथि आषाढमें अष्टमी हो और आर्द्रापर सूर्य हो तो श्रावणमें वर्षा नहीं होवे ॥ ३ ॥

नवम्यां चन्द्रबिंबस्य परिवेषश्च जायते ॥
तदाषाढे महावृष्टिः पूर्वं धान्यमहर्घता ॥ ४ ॥
माघमासे तपस्ये वा चैत्राषाढे च माधवे ॥
सप्तम्यां स्वातियुक्तायां लक्षणं च शुभप्रदम् ॥ ५ ॥

माघशुदीनवमीके दिन जो चन्द्रमाके दिन जो चन्द्रमाके आसपास मंडल होवे तो प्रथम अन्न महँगा होवे, पश्चात् सस्ता होवे और आषाढमें वर्षा अच्छी होवे ॥ ४ ॥ माघ, फाल्गुन, चैत्र, आषाढ, वैशाख इन महीनोंमें सप्तमीको स्वातिनक्षत्र होय तो शुभ लक्षण और शुभ हो जानना ॥ ५ ॥

शुक्लपक्षस्य सप्तम्यां माघे व्योमान्वितं घनैः ॥
पुरो वातोथ कौबेरो वारुण्यां चंचला यदि ॥ ६ ॥
हिमं पतति वा तत्र वांति वातास्तदोद्धताः ॥
तदा सुभिक्षमादेश्यं तस्मिन्देशे विचक्षणैः ॥ ७ ॥

माघके शुक्लसप्तमीको जो बादल होवे और पूर्वकी और उत्तरकी पवन चले तथा जो पश्चिममें बिजली चमके ॥ ६ ॥ अथवा पाला पडै वा प्रबल पवन चलै तो उस देशमें पंडितोंकरके सुभिक्ष हो ऐसा कहना ॥ ७ ॥

माघमासस्य नवमी दशम्येकादशी तथा ॥
विद्युद्वातसमायुक्ता तदा बहुजलप्रदा ॥ ८ ॥
पंचमी कृष्णपक्षस्य माघमासस्य षष्टिका ॥
सप्तमी शुक्रमन्देन्दुयुक्ता सस्यार्द्धदा मता ॥ ९ ॥

माघशुदीनवमी, दशमी तथा एकादशीको बिजली चमके और पवन चले तो बहुत जल होवे ॥ ८ ॥ माघ कृष्णपंचमी, षष्ठी, सप्तमीको जो शुक्र, शनि, सोमवार होवे तो खेतीकी वृद्धि होवे ॥ ९ ॥

क्त योगा यदा माघे न भवन्ति तदा खलु ॥
गोधूमाः शालयो मुद्गाः भाद्रे यांति महर्घताम् ३१०

यह पूर्वोक्त योग जो माघमें नहीं होवें तो गेहूँ, चावल, मूंग यह वस्तु भाद्रमासमें महँगी हो जावे ॥ ३१० ॥

माघमासे त्रयोदश्यां हिमैराच्छादितं नभः ॥
यदा तदा महर्घन्ति व्रीहयो नात्र संशयः ॥ ११ ॥

माघमासमें त्रयोदशीको जो कुहरसे आकाश ढक जावे तो अन्न सस्ता होवे इसमें संशय नहीं ॥ ११ ॥

अमावास्या यदा छन्ना तदा भाद्रे जलं भवेत् ॥
पूर्णमासी घनछन्ना षष्ठे मासि महर्घता ॥ १२ ॥

जो माघमासमें अमावास्याको बादल होवे तो भाद्रमासमें जल बहुत होवे, तथा जो पूर्णमासीके दिन बादल हो तो छठे महीनेमें सब वस्तु महँगी होवे यह माघमासका फल कहा ॥ १२ ॥

अथ फाल्गुनमासफलम् ।

यदा वक्रगती स्यातां शनिभौमौ तपस्यके ॥

माघे चाद्यासु तिथिषु त्रिषु सस्यस्य संग्रहः ॥१३॥
कार्य्यो विपश्चिता तत्र पक्षांते स्याच्चतुर्गुणम् ॥
फाल्गुने च गुरोरस्तं वक्रं वा यदि जायते ॥
तदा सस्यमहर्घत्वं शनिर्वा वक्रतां व्रजेत् ॥ १४ ॥

जो फाल्गुनमासमें शनि, मंगल वक्री होवें, अथवा माघमें प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया इन तिथियोंमें वक्री होवें तो तृणधान्यका संग्रह करे ॥ १३ ॥. फिर पंद्रह दिन उपरान्त बेचै तो चौगुना लाभ होवे, तथा फाल्गुनमासमें बृहस्पतिका अस्त हो वा वक्री होवे वा शनि वक्री हो तो तृण महँगा होवे ॥ १४ ॥

यदा फाल्गुनके मासे प्रयात्यस्तं भृगोः सुतः॥१५॥
धान्यादिसर्वसस्यानां तदा वाच्या महर्घता ॥
तदा दुर्भिक्षमादेश्यं षण्मासं दैवचिन्तकैः ॥ १६ ॥

जो फाल्गुनमें शुक्र अस्त होवे ॥ १५ ॥ तो अन्न और तृण सब महँगा होवे, और छः मासतक दैवज्ञ जनोंको अन्न महँगा हो ऐसा कहना चाहिये ॥ १६ ॥

सप्तमी कृत्तिकायुक्ता फाल्गुनस्य सिता यदा ॥
तदा भाद्रपदे मासे कुह्वां मेघः प्रवर्षति ॥ १७ ॥
विना वातं घनैश्छन्नं वियत्तस्यां तिथौ यदा ॥
विद्युद्वा जायते तत्र तदा सस्यावृता मही ॥ १८ ॥

फाल्गुनशुक्ल सप्तमीको जो कृत्तिका नक्षत्र हो तो भाद्रमासमें अमावास्याके दिन मेघ वर्षे ॥ १७ ॥ तथा उसी दिन जो विना पवन चले बादल होवे और बिजली चमके तो पृथिवीपर तृण बहुत उपजै ॥ १८ ॥

फाल्गुनस्य त्रयोदश्यामष्टम्यां वृष्टिरुत्तमा ॥
यदि स्याच्च सितायां वै तदा लोका निरामयाः॥१९॥
प्रतिपच्छुक्लपक्षस्य वृद्धिं याति तदा शुभम् ॥
तृतीया दुःखदा प्रोक्ता चतुर्दश्यष्टमी तथा॥२०॥

फाल्गुनशुदी त्रयोदशी और अष्टमीके दिन जो वर्षा होवे तो लोकमें मनुष्य आरोग्य रहें ॥ १९ ॥ फाल्गुन शुक्लमें जो प्रतिपदाकी वृद्धि हो तो शुभ जानना, तृतीयाकी

वृद्धि हो तो दुःखदायक जानना, तथा चतुर्दशी वा अष्टमीकी वृद्धिसेभी यही फल जानना ॥ ३२० ॥

फाल्गुने मीनसंक्रान्तौ भानुवारे तिथिक्षयः ॥
भौमशन्योश्च दुर्भिक्षं सितेज्येन्दौ सुभिक्षकम्॥२१॥

फाल्गुनमास मीनकी संक्रान्तिमें रवि, भौम, शनि इन वारोंमें तिथिका क्षय होवे तो दुर्भिक्ष (महँगा) होवे, और शुक, बृहस्पति, चन्द्र इन वारोंमें तिथिक्षय होनेसे सुभिक्ष होवे ॥ २१ ॥

अथाऽल्पवृष्टिलक्षणम् ।

माघे हिमं न पतितं वातो वाति न फाल्गुने ॥
न च व्योमान्वितं चैत्रे घनेन पतनं यदि ॥ २२ ॥
करकाणां च वैशाखे ज्येष्ठे चण्डातपो न चेत् ॥
तदाऽतितुच्छवृष्टिः स्यात्प्रावृट्काले न संशयः२३॥

जो माघमें पाला न गिरे, फाल्गुनमें पवन नहीं चले, चैत्रमें बादल नहीं हो ॥२२॥ और जो वैशाखमें ओला नहीं गिरे, ज्येष्ठमें सूर्य नहीं तपे अर्थात् अधिक गर्मी

नहीं होवे तो वर्षासमयमें बहुत थोडी वृष्टि होवे इसमें संशय नहीं ॥ २३ ॥

अथ दुर्भिक्षलक्षणम् ।

आषाढस्यासिते पक्षे दशम्यादिदिनत्रये ॥
रोहिणीकालमाख्याति सुखदुर्भिक्षलक्षणम् ॥ २४ ॥
रात्रावेव निरभ्रं स्यात्प्रभाते मेघडंबरम् ॥
मध्याह्ने जलबिंदुः स्यात्तदा दुर्भिक्षकारणम् ॥२५॥

आषाढमासके कृष्णपक्षकी दशमी, एकादशी, द्वादशी इन तीनों तिथियोंमें जो रोहिणी नक्षत्र आवे तो सुभिक्ष, मध्यम दुर्भिक्ष यह फल तिथिक्रमसे जानना ॥ २४ ॥ और रात्रि मेघरहित हो प्रातःकाल मेघ गरजै, मध्याह्न समय बूंदें पडें तो दुर्भिक्षका कारण कहिये अर्थात् अन्न महँगा होवे ऐसे लक्षणसे विचारना ॥ २५ ॥

अथ जललग्नम् ।

कुंभः कर्कवृषौ मीनमकरौ वृश्चिकस्तुला ॥
जललग्नानि चोक्तानि ज्ञेयान्येतेषु सूर्यभम् ॥

लभत्येव सदा वृष्टिर्ज्ञातव्या गणकोत्तमैः ॥ २६ ॥

कुंभ, कर्क, वृष, मीन, मकर, वृश्चिक, तुला यह ७ जललग्न हैं इनमें जो सूर्यनक्षत्र मिले तो वर्षा होवे ऐसा पंडितों करके जानना ॥ २६ ॥

अथ मेघनक्षत्रमाह ।

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषविष्णुमघासु च ॥
स्वात्यां प्रविशते भानुर्वर्षते नात्र संशयः ॥ २७ ॥

अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, श्रवण, मघा, स्वाति ये जलनक्षत्र हैं, इन नक्षत्रोंमें सूर्य प्रवेश करे तो वर्षा अच्छी होवे इसमें संशय नहीं करना ॥ २७ ॥

अथ पुंस्त्रीनपुंसकनक्षत्राणि ।

आर्द्रादिदशकं स्त्रीणां विशाखात्रिनपुंसकम् ॥
मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद्बुधैः ॥ २८ ॥
वायुर्नपुंसके भे च स्त्रीणां भे चाभ्रदर्शनम् ॥
स्त्रीणां पुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥ २९ ॥

अब पुरुष, स्त्री, नपुंसक नक्षत्र कहते हैं आर्द्रासे लेकर स्वातिपर्यन्त दस नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक हैं, विशाखासे ज्येष्ठातक तीन नक्षत्र नपुंसक हैं और मूलसे आर्द्रापर्यन्त चौदह नक्षत्र पुरुषसंज्ञक हैं ॥ २८ ॥ नपुंसकनक्षत्रमें जो वर्षाका नक्षत्र प्रवेश हो तो वायु चले, स्त्रीनक्षत्रमें सूर्यनक्षत्र लगे तो मेघदर्शन रहे अर्थात् बादल घेरे रहें वर्षे नहीं, तथा स्त्रीपुरुषका योग हो तो निश्चय वृष्टि होवे ॥ २९ ॥

अथ सूर्य तथा चन्द्रनक्षत्रसंज्ञा ।

अश्विन्यादित्रयं चैव आर्द्रादेः पंचकं तथा ॥
पूर्वाषाढादि चत्वारि चोत्तरारेवतीद्वयम् ॥ ३० ॥
उक्तानि शशिभान्यत्र प्रोच्यन्ते सूर्यभान्यथ ॥
रोहिणी च मृगश्चैव पूर्वाफाल्गुनिका तथा ॥ ३१ ॥
सूर्ये सूर्ये भवेद्वायुश्चन्द्रे चन्द्रे न वर्षति ॥
सूर्यचन्द्रसमायोगस्तदा वर्षति मेघराट् ॥ ३२ ॥

अश्विनी आदि तीन नक्षत्र, आर्द्रा आदि पाँच नक्षत्र पूर्वाषाढासे चार नक्षत्र अर्थात् अश्विनी, भरणी, कृत्तिका,

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा और उत्तरा, रेवती ॥ ३३० ॥ यह नक्षत्र चंद्रमाके हैं, अब सूर्यके नक्षत्र कहते हैं, रोहिणी, मृगशिरा तथा पूर्वाफाल्गुनी आदि सब शेष नक्षत्र सूर्यके हैं ॥ ३१ ॥ सूर्यसूर्यके योगमें वायु वहै, चन्द्रचन्द्रके योगमें न वर्षे और सूर्यचन्द्रमाका योग हो तो वर्षा बहुत होवे ३२

अथ चन्द्रसूर्यपरिवेषलक्षणम् ।

यदि भवति शशांके मंडले चंद्ररश्मौ
रविशनिकुजवारे पौषमासे त्वमायाम् ॥
द्विगुणदहनवेदैस्तुल्यते रत्नमौल्यं
बुधगुरुभृगुसोमे स्वल्पमौल्यं हि धान्यम् ॥ ३३ ॥

जो पौष कृष्ण अमावास्याको रवि, शनि, मंगल वारमें सूर्यचन्द्र मंडल होवै तो अन्नका मौल्य द्विगुण, त्रिगुण, चौगुण हो जावै, किन्तु रत्नोंके समान मूल्यकी तुलना करे और बुध गुरु शुक्रवार हो तो थोडा मोल अन्नका हो जाय अर्थात् अन्न सस्ता विके ॥ ३३ ॥

रविशशिपरिवेषे पूर्वयामे च पीडा
रविशशिपरिवेषे मध्यमे चाल्पवृष्टिः ॥
रविशशिपरिवेषे धान्यनाशस्तृतीये
रविशशिपरिवेषे राज्यभंगश्चतुर्थे ॥ ३४ ॥

जो सूर्यचंद्रका मंडल पहले प्रहरमें होवे तो मनुष्यादिको पीडा हो, और दूसरे प्रहरमें सूर्यचन्द्रमंडल होनेसे थोडी वृष्टि होवे, तीसरे प्रहरमें सूर्यचन्द्रमंडल हो तो धान्यका नाश हो, चौथे प्रहरमें सूर्यचन्द्रमण्डल हो तो राज्यभंग होवे ॥ ३४ ॥

अथ संवत्सरलग्नफलम् ।

यस्मिन्वर्षे च लग्ने शशिनि तनुगते सौम्यराशिस्थिते वा केन्द्रे याते प्रचुरमुदकं सौम्ययोगोपदृष्टे ॥ पापैर्दृष्टे न च बहुजलं प्रश्नकालेपि तद्वद्वाच्यं सर्वं फलमविकलं चन्द्रवद्भार्गवोपि ॥ ३५ ॥

जिस संवत्सरकी लग्नमें अथवा केन्द्रमें जो चन्द्रमा

होय शुभग्रहके घरमें हो वा शुभग्रहकी दृष्टि हो तो बहुत वृष्टि होवे और जो चन्द्रमा पापग्रहकी राशिमें हो पापग्रहकी दृष्टि हो तो बहुत जल नहीं वर्षे, यह चन्द्रमाके तद्वत शुक्रकाभी विचार करना और वृष्टिप्रश्नसमयमेंभी यही विचारना ऐसा कहा है ॥ ३५ ॥

अथ दुर्भिक्षलक्षणम् ।

उल्कापातो वज्रपातः परिधिः शशिसूर्ययोः ॥३६॥
धूमकेतुः शक्रचापो ग्रहणं बहुधा यदा ॥
तदा सकलवस्तूनां जायते च महर्घता ॥ ३७ ॥

उल्कापात (तारे टूटना) वज्रपात (बिजली गिरना) सूर्यचन्द्रमंडल होना, धूम्रकेतु (पुच्छवाले नक्षत्र) का उदय, इन्द्रधनुषका निकलना, बहुतसे ग्रहण ऐसे योग हों तो सब वस्तु महँगी होवे ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

अथ वृष्टिलक्षणम् ।

प्रष्टा पृच्छन्स्पृशति सलिलं वारिकार्योन्मुखो वा पृच्छाकाले सलिलमिति वा श्रूयते

सन्मुखे वा ॥ दृष्टः कूपो विमलसलिलं चेद्ददे-
द्वारिवृष्टिमन्तःसर्वं भवति च फलं व्यत्यये
व्यत्ययेन ॥ ३८ ॥

जो वृष्टिप्रश्नकर्ता प्रश्नसमय जलका स्पर्श करे अथ-
वा उस समय जलशब्द सुननेमें आवे, या जलकी बनी
हुई वस्तु तथा कुवाँ, बावडी, तालाव इन पर दृष्टि जाय
तो जलकी वृष्टि अच्छी होवे इससे विपरीत लक्षण होवे
तो विपरीत फल हो अर्थात् वर्षा नहीं होवे ॥ ३८ ॥

प्रातःकाले पीतरश्मिर्दुर्निरीक्ष्यो भवेद्रविः ॥
स्निग्धवैडूर्यकांतिश्चेन्मेघो वृष्टिप्रदः स्मृतः॥३९॥
प्रातःकाले यदा सूर्यो मध्याह्ने दुःसहो भवेत् ॥
तद्दिने वृष्टिदः प्रोक्तो घृतस्वर्णसमप्रभः ॥४०॥

जो प्रातःसमय सूर्यमें तेज अधिक हो, चाम पीली हो
और मेघ चिकने श्यामवर्ण होंय तो वे मेघ वर्षा करनेवा-
ले कहे हैं ॥ ३९ ॥ तथा जो प्रातः सूर्योदयसमयमें वा

मध्याह्नसमयमें सूर्यका तेज अधिक हो और मेघ गलाये हुये सुवर्णकांतिके समान हो तो उसी दिन वृष्टि करनेवाले मेघ कहिये ॥ ४० ॥

यदा जलं वै विरसं जलदा गोत्रसन्निभाः ॥
दिशश्च विमलाः सर्वाः काकांडाभं नभस्तलम् ४१
न यदा वाति पवनश्छन्नं यान्ति झषादयः ॥
शब्दं कुर्वन्ति मंडूकास्तदा वृष्टिरनुत्तमा ॥ ४२॥

जो जल विरस हो, बादल पर्वतसदृश हों, दिशायें निर्मल हों, कौएके अंडेके समान आकाश होय ॥ ४१ ॥ तथा पवन न चले, मछली आदि जलजन्तु पृथिवीमें जा लगें, मेंडक शब्द करने लगे तो उत्तम वृष्टि होवे और शीघ्र वर्षा होवे ॥ ४२ ॥

नखैर्लिखन्ति मार्जाराः पृथिवीं च यदा भृशम् ॥
लोहानां मलनिचयो विस्रगंधो यदा भवेत् ॥ ४३ ॥
सेतुं कुर्वन्ति रथ्यायां शिशवो मिलिता यदा ॥
शुद्धांजनाभा गिरयो बाष्पमुद्रितकन्दराः ॥ ४४ ॥

बिल्ली, कुत्ता आदि अपने पंजोंसे पृथिवीको खोदें लोहेके मैलमें दुर्गन्धि आवे ॥ ४३ ॥ मार्गमें बालक सब मिलकर सेतु बांधे और अंजनके समान पर्वत हो जाँय, पर्वतोंकी गुफा पसीजने लगें ॥ ४४ ॥

पिपीलिका यदांडानि गृहीत्वोच्चं प्रयांति च ॥
सर्पा वृक्षं समायान्ति तदा वृष्टिरभूत्किल ॥४५॥
गावः सूर्यं निरीक्षन्ते कृकलासगणास्तथा ॥
गृहान्नेच्छंति पशवो निर्गमं कुक्कुरास्तथा ॥४६॥

तथा जो चिउँटी अपने अंडोंको लेलेकर ऊपरको चढें, सर्प वृक्षपर चढें तो निश्चय वृष्टि होवे ॥ ४५ ॥ तथा गौ सूर्यकी ओर देखें गिरगिटभी सूर्यको देखें पशु घरसे जानेकी इच्छा नहीं करे तथा कुत्तेभी घरसे बाहर निकलना नहीं चाहें ॥ ४६ ॥

लताश्चोर्ध्वमुखाः सर्वाः स्नानं कुर्वन्ति पक्षिणः ॥
पांसुभिश्च तृणाग्राणि सेवंते गा सरीसृपाः ॥ ४७ ॥
वियत्तित्तिरपक्षाभमालिपक्षनिभं तथा ॥

तदा वृष्टिः समादेश्या निश्चितं देवचिन्तकैः ॥४८॥

वृक्षोंकी शाखायें ऊंची खडी हो जांय और जीवजन्तु पक्षी आदि धूलमें स्नान करें तथा वृक्षोंकी शाखाओंके अग्रभागमें कीडे झूलें ॥ ४७ ॥ और तीतरके पंख समान बादल होय तो दैवज्ञों करके निश्चय वृष्टि कहना चाहिये यह वृष्टिके लक्षण वर्णन किये ॥ ४८ ॥

अथ सद्योवृष्टिलक्षणम् ।

॥ प्रावृट्काले शीतरश्मिर्यदा स्याच्छुक्रात्तुर्य्ये सौम्यदृष्टो यदा स्यात् ॥ बुद्धिस्थाने सप्तमे च त्रिकोणे वृष्टिर्वाच्या देवविद्भिः पुराणैः॥४९॥

वर्षाकालमें जो शुक्रसे चौथे घरमें शुभदृष्ट चन्द्रमा हो तथा पांचवें सातवें और त्रिकोण ९।५ में जो चंद्रमा हो शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो शीघ्रवृष्टि कहिये यह प्राचीन आचार्यों करके कहा गया है ॥ ४९ ॥

शुभाश्च जलराशिस्थाः केन्द्रगाः स्वीयगेहगाः ॥

जलप्रदा सिते पक्षे विधौ चोदयगे जले ॥ ३९० ॥

सप्तमगौ रविचंद्रौ सितरविजौ रसातले लग्नात् ॥
प्रावृट्काले जलदो भवतो वा द्वितीयसहजस्थौ ५१॥

जो शुभ ग्रह जलराशिमें हो और केन्द्रमें यह स्वगृही होय तथा जो चन्द्रमाका उदय जलराशियोंमें हो और शुक्लपक्ष होय तो वर्षा शीघ्र होवे ॥ ३५० ॥ वर्षाकालमें लग्नसे जो सातवें सूर्य चन्द्रमा हों और चौथे शुक्र शनि हों अथवा दूसरे तीसरे हों तोभी वर्षा शीघ्र होवै ॥ ५१ ॥

प्रश्नलग्नात्तोयराशिर्यदि वित्तस्तृतीयके ॥
तोयसंज्ञो ग्रहस्तत्र भवत्यभ्रं जलप्रदम् ॥५२॥
संयोगे सितबुधयोस्तथा च गुरुशुक्रयोः ॥
तथैव जीवबुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः ॥५३॥

प्रश्नलग्नसे दूसरे वा तीसरे जलराशि हो और वहां जल ग्रह बैठा होय तो शीघ्र वर्षा होवे ॥ ५२ ॥ तथा जो शुक्र बुध एकराशिमें हों बृहस्पति, शुक्र एक घरमें हों अथवा बुध गुरु एक राशिमें हो तो निस्सन्देह शीघ्र वर्षा होय ५३

यदा भवंति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलंबिनः ॥

पुरतो वा यदा यांति तदा त्वेकार्णवा मही ५४॥
बुधभृग्वोर्मध्यगतः सूर्यश्चेज्जलशोषकः ॥
तयोर्यदि समीपस्थस्तदा बहुजलप्रदः ॥ ५५ ॥

जो सूर्यके आगे वा पीछे ग्रह होंय तो जलमयी पृथ्वी हो जावे ॥ ५४ ॥ तथा जो बुध और शुक्रके मध्यगत सूर्य होवे तो जलको शोषे और जो पासही होय तो शीघ्र बहुत जल बरसे ॥ ५५ ॥

अग्रे याति यदा भौमः पश्चाच्चलति भास्करः ॥
तदा वृष्टिर्न विपुला जायते नात्र संशयः॥५६॥

जो आगे मंगल होय और पीछे सूर्य होय तो वर्षा बहुत नहीं होवे अन्यथा वृष्टि होवे इसमें संशय नहीं ५६

अतिचारगते मन्दे भौमे मन्दे च वक्रिणि ॥
हाहाभूतं जगत्सर्वं विशेषाद्दक्षिणापथे ॥ ५७ ॥

बृहस्पति अतिचार हो और मंगल शनि वक्री होय तो जगत्में हाहाकार हो विशेषकरके दक्षिणमें पीडा हो ५७

दर्शो वै पौषमासे भवति यदि बलारातिनक्षत्रयुक्तो देशे सस्यं महर्घं भवति च तदा मूलयुक्तोऽर्धमौल्यम् ॥ पूर्वाषाढायुतश्चोद्विगुणमपयुतो वैश्वदेवेन कुर्यात् दुर्भिक्षं राष्ट्रभंगं जनपदमरणं नर्तयत्को पिशाचान् ॥ ९८ ॥

जो पौषमासकी अमावास्याको ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो देशोंमें तृण महंगा होवे, मूलनक्षत्र हो तो आधा मोल विके, पूर्वाषाढा नक्षत्र हो तो दूना मोल होवे, उत्तराषाढा नक्षत्र होवे तो दुर्भिक्ष पडे और मनुष्यादि प्राणी बहुत मरें तथा भूत पिशाच नाचें ॥ ९८ ॥

माघेयवारे रविजे कुजे वा भवेदमा शीतकरश्रिया वा ॥ लोकः सशोकः क्षितिपालकः परस्परं युद्धयति शस्त्रसंघैः ॥ ९९ ॥

जो माघी पौर्णमासी तथा अमावास्याको शनि मंगल व सूर्यवार हो तो सब लोकमें शोक व राजाओंमें परस्पर हथियारोंसे युद्ध करें ॥ ९९ ॥

छत्रस्य भंगः सलिलस्य नाशो लोकेषु पीडा पशुवित्तहानिः ॥ स्याच्छ्रीविहीनो यदि चक्रवर्ती वक्रे च शौरे पितृसंस्थिते च ॥ ६० ॥

जो मघानक्षत्रपर स्थित शनैश्वर वक्री होवे तो छत्रभंग हो, जल, पशु तथा द्रव्यका विनाश हो और पशुओंमें पीडा व चक्रवर्ती राजाभी लक्ष्मी करके हीन होवे ॥ ६० ॥

यदा धनुर्मीनवृषालिसंस्थिते धरासुते सूर्यसुते च वक्रिणि ॥ हयैश्च नागैश्च नरैश्च गोकुलैस्त्रिभागशेषां कुरुते वसुन्धराम् ॥ ६१ ॥

जो धन मीन वृष वृश्चिक इन राशियोंपर स्थित मंगल और शनैश्वर वक्री होवें तो घोडा हाथी और मनुष्य गौयें ये सब जीव पृथ्वीपर तिहाई शेष रहें ॥ ६१ ॥

यदारशौरी सुरराजमंत्री यदेकराशौ समसप्तके वा ॥ अयोध्यलंकापुरमध्यदेशे क्षुधाभयं शस्त्रभयं करोति ॥ ६२ ॥

जो मंगल शनैश्वर बृहस्पति यह ग्रह एक राशिपर हों

अथवा परस्पर सातवें हों तो अयोध्या लंका इनके मध्यके देशोंमें दुर्भिक्ष और शस्त्रका भय होवे ॥ ६२ ॥

वक्रं गतो रविसुतोऽथ धरासुतो वा हस्ते तथैव पितृदैवतरौद्रभेषु ॥ क्षत्रस्य भंगपतनं भुवि सैनिकानां सर्वत्र लोकमरणं खलु शस्त्रसंघैः ॥ ६३ ॥

शनि अथवा मंगल हस्त मघा आर्द्रा इन नक्षत्रोंपर स्थित होके वक्री होवैं तो क्षत्रभंग हो और सेना कटकर पृथ्वीपर गिरे, तथा निश्चय करके लोकमें मनुष्योंका मरण हथियारोंके समूहसे होवे ॥ ६३ ॥

कन्यायां मीनसिंहे वृषधनुषि यदा वक्रगौ भौममन्दौ पृथ्वीशाक्रूररूपा बहुरिपुदलिता विग्रहश्चैव पीडा ॥ दुर्भिक्षं सस्यनाशो ग्रहगतिभयदाः पित्तरोगाः प्रजानां पीड्यंते चात्रिगोत्रा नृपमहिषगजास्तान्निवृत्तौ तु यावत् ॥ ६४ ॥

जो कन्या, मीन, सिंह, वृष, धनु इन राशियोंपर स्थित मंगल शनैश्वर वक्री होय तो राजाओंको दुष्टरूप शत्रुओंसे बहुत पीडा तथा बिगाड होवे, और दुर्भिक्ष, तृणका नाश होवे, प्रजामें भय पित्तकी बाधा हो तथा अत्रिगोत्रवाले अर्थात् चन्द्रवंशी राजाओंको, पशुओंको पीडा हो, जब मार्गी होवे तब यह फल निवृत्त होवे ॥ ६४ ॥

शुक्रसौम्योर्द्वयोरस्तमेकराशौ यदा भवेत् ॥
अन्नपीडा महायुद्धं देशे देशे च विग्रहः ॥ ६५ ॥
चत्वारः पंचगाः खेटा बलिनस्त्वेकराशिगाः ॥
राज्ञां बहुभयं दद्युररिभिर्दुःखदा मताः ॥ ६६ ॥

शुक्र, शनि यह दोनों ग्रह जो एक राशिपर होवे और अस्त हो जावें तो अन्नपीडा, महायुद्ध, देशदेशोंमें विग्रह होवे ॥ ६५ ॥ तथा जो चार ग्रह एक राशिके होके वर्ष (सम्वत्सर) लग्नसे पंचम स्थानमें हों तो राजाओंको बहुत भय और दुःखके देनेवाले जानिये ॥ ६६ ॥

यदा प्रतिपगौ खेटौ नृपं क्षोभयतस्तदा ॥
प्रतीपगास्त्रयः खेटा युद्धदृष्टिभयप्रदाः ॥ ६७ ॥
राज्यभंगं हि कुर्वन्ति चत्वारो यदि वक्रिणः ॥
प्रतीपगाः पंच खेटा भंगदा राज्यराष्ट्रयोः ॥ ६८ ॥

जो दो ग्रह वक्री होयँ तो राजाको चलायमान करे हैं, तीन ग्रह वक्री हों तो देखनेमें भयदायक युद्धको करें हैं ॥ ६७ ॥ तथा जो चार ग्रह वक्री होंय तो राज्यभंग करै हैं पांच ग्रह वक्री होंय तो देशोंको भंग करनेवाले जानने ६८

अर्कशौरी भौमशौरी तमःसौरेज्यमंगलौ ॥
गुरुसौरी महायोगो महीनाशाय कल्प्यते ॥ ६९ ॥
पंच ग्रहा घ्नन्ति चतुष्पदांश्च षट् वै ग्रहा
घ्नंति समस्तभूपान् ॥ सप्त ग्रहा घ्नन्ति स-
मस्तदेशान् अष्टग्रहैःस्यात् खलु कूटयोगः ॥ २७० ॥

रवि शनि, मंगल शनि, व राहु शनि वा गुरु मंगल, तथा बृहस्पति शनैश्वर उन दो दो ग्रहोंका योग हो तो पृथिवीका नाश हो ॥ ६९ ॥ पांच ग्रह जो एक राशिपर हों तो पशु-

ओंका नाश हो छः ग्रह एक राशिपर हों तो सब राजाओंका नाश करें, सात ग्रह एक राशिपर हों तो सब देशोंका नाश होय, आठ ग्रह एक राशिपर हों तो कालकूट योग होता है जिसमें पृथिवीभरमें कोलाहल हाहाकार हो जावे ३७०॥

अथ संक्रान्तिवशेन शुभाशुभफलम् ।

संक्रांतिर्जायते यत्र भास्करे भूसुते शनौ ॥
तस्मिन्मासि भयं घोरं दुर्भिक्षं दृष्टितो भयम्॥७१॥
संक्रांतिसमये भानोर्भवेत्सप्तमगः शशी ॥
तदाकाले महर्घं स्यात्सर्वधान्यं सुनिश्चितम् ॥७२॥

जिस महीनेमें सूर्यकी संक्रान्ति मंगल, शनिवारमें प्रवेश हो, उस महीनेमें घोर दुर्भिक्ष और भय होवे ॥ ७१ ॥ जो संक्रान्तिके दिन सूर्यकी राशिसे सातवें घर चन्द्रमा हो तो उस महीनेमें निश्चय करके सब अन्नादिक पदार्थ महंगे होवें ॥ ७२ ॥

मीने मेषे द्विमासं स्यात्तथा सिंहोदये त्रिषु ॥
मासं मिथुनगे सूर्ये द्विमासं वृषकुंभयोः ॥ ७३ ॥

कर्के मृगे च षण्मासं मासं शेषे महर्घता ॥
पूर्वसंक्रातिनक्षत्रात्परसंक्रमणं यदि ॥ ७४ ॥
द्वित्रिऋक्षे सुभिक्षं स्याद्दुर्भिक्षं तुर्यपंचमे ॥
षष्ठे लोका भ्रमंत्याशु गृहीत्वा खर्परं करे ॥७५॥

मीन मेषकी संक्रान्तिमें जो सूर्यसे सातवें चंद्रमा हो तो दो महीनेतक महँगा होवे, सिंहकी संक्रांतिमें हो तो तीन महीनेतक, मिथुनमें एक मासतक, वृष, कुंभकी संक्रान्तिमें हो तो दो महीनेतक ॥ ७३ ॥ कर्कमकरकी संक्रान्तिमें हो तो छः मासतक, शेष राशियोंकी संक्रांतिमें हो तो एक मासतक दुर्भिक्ष जानना, पहली संक्रान्तिके नक्षत्रसे दूसरी संक्रान्ति जो ॥७४॥ दूसरे तीसरे नक्षत्रपर प्रवेश हो तो सुभिक्ष (सस्ता) अन्न होवे और चौथे, पाचवें नक्षत्रपर होवे तो दुर्भिक्ष हो, तथा छठे नक्षत्रपर हो तो शीघ्र लोक खप्पर हाथमें लिये मांगते फिरे ॥ ७५ ॥

अथ तिथिवारपरत्वेन शुभाशुभफलम् ॥

प्रतिपद्बुधसंयुक्ता सदा दुर्भिक्षकारका ॥

ज्येष्ठमासे विशेषेण वर्षे त्वागामिके भयम् ॥७६॥
मासर्क्षात्पूर्णिमा हीना समानाथाधिवाधिका ॥
समर्घं च समत्वं च महर्घं च भवेत्क्रमात् ॥७७॥

सब महीनोंमें यह विचारना जो बुधवारकी प्रतिपदा हो तो दुर्भिक्षकारक जानना विशेष करके ज्येष्ठमासमें जो प्रतिपदा बुधवारकी हो तो आगेके सालमें भयकारक दुर्भिक्ष जानना ॥७६॥ महीनेके नक्षत्रसे जो पूर्णमासी तिथि कमती हो तो सस्ता भाव हो बराबर हो तो भाव समान हो अधिक हो तो महँगा होवे ॥ ७७ ॥

ज्येष्ठस्यागमने प्राज्ञैर्या तिथिः प्रथमा भवेत् ॥
केन वारेण संयुक्ता विज्ञाया सा विशेषतः ॥७८॥
भानुना पवनो वाति कुजेन व्याधिमादिशेत् ॥
चन्द्रपुत्रेण दुर्भिक्षं भवतीह न संशयः ॥ ७९ ॥

ज्येष्ठमासके लगतेही बुद्धिवान् जन विचार करै, कि प्रतिपदाके दिन कौन वार है जिससे फलकी विशेषता जानना ॥ ७८ ॥ जो प्रतिपदाको रविवार हो तो पवन

बहुत चले मंगलवार हो तो रोग होवे बुध हो तो दुर्भिक्ष हो इसमें संशय नहीं ॥ ७९ ॥

गुरुभार्गवसोमानामेकोपि यदि जायते ॥
वर्षावधि भवेत्पृथ्वी सस्यधान्यधनाकुला॥८०॥
अथवा दैवयोगेन शनिवारस्तदा भवेत् ॥
जलशोषप्रजानाशः छत्रभंगस्तदा भवेत्॥॥८१

तथा जो गुरु, शुक्र, चंद्र इन वारोंमेंसे कोई एक वार हो तो वर्षपर्यन्त पृथिवी तृण, अन्न, धनसे परिपूर्ण रहै ॥ ३,८० ॥ अथवा दैवयोगसे शनिवार होवे तो जलको शोपजाय अर्थात् वर्षा नहीं होवे, और प्रजाका नाश तथा क्षत्रभंग होवे ॥ ८१ ॥

चन्द्रोदयं निरीक्षेत द्वितीया लब्धजन्मनः ॥
ज्येष्ठोत्तरं ह्यमायां च भानोरस्तं विलोकयेत्॥८२
यद्युत्तरे शशी मध्येवायाति दक्षिणे रवेः ॥
उत्तमो मध्यमो नीचः कालः संपद्यते तदा॥८३॥

द्वितीयाके चन्द्रमाका उदय, और ज्येष्ठमासमें अमा-

वास्याके दिन सूर्यका अस्त देखे ॥ ८२ ॥ जो सूर्यसे उत्तरमें चन्द्रमा होवे तो समय उत्तम होवै और जो मध्यमें होवे तो मध्यम समय होवे, तथा दक्षिणमें हो तो समय अधम जानना ॥ ८३ ॥

आषाढे श्रावणे पौषे रविभौमशनैश्चराः ॥
वासरा यत्र जायंते तत्फलं यच्छृणुष्व तत् ॥८४॥
पंचार्कवारे दुर्भिक्षं पंचभौमे महद्भयम् ॥
पंचमन्दे च रोगः स्यात् शेषा वाराः शुभावहाः८५

आषाढ, श्रावण, पौष इन महीनोंमें जो रवि मंगल शनि यह वार होवें तिनका फल श्रवण करो ॥ ८४ ॥ जो पाँच रविवार हों तो दुर्भिक्ष हो, पाँच मंगलवार हों तो महाभय हो, और पाँच शनिवार हों तो रोग हो, शेषवार हों तो शुभ फल जानना ॥ ८५ ॥

आषाढे श्रावणे पौषे वैशाखे भृगुदर्शनम् ॥
गवां मृत्युः प्रजापीडाः दुर्भिक्षं राजविग्रहः ॥८६॥
समाना ऋतवः सर्वे वांति वाताः शुभाः यदि ॥

लक्षणानि शुभानि स्युः सर्वदैव शुभं तदा ॥८७॥

आषाढ, श्रावण, पौष, वैशाख इन महीनोंमें जो शुक्रोदय होवे तो गौवोंकी मृत्यु हो, प्रजाको पीडा हो, तथा दुर्भिक्ष हो, राजामें विग्रह होवे ॥ ८६ ॥ जो सब ऋतुयें समान हों अर्थात् ऋतुओंका विपर्यय नहीं हो, पवन उत्तमतासे मन्द मन्द बहे अर्थात् कठोर पवन नहीं होय, और लक्षण शुभ हों तो समय अच्छा जानना ॥ ८७ ॥

संक्षेपेण मया प्रोक्तं तिथिवारोद्भवं फलम् ॥
ज्ञातव्यं च प्रयत्नेन ग्रन्थेस्मिन् बुद्धिमत्तरैः ॥८८

इति श्रीमदवन्तिकाचार्य्यवराहमिहिरविरचितं मयूरचित्रकं समाप्तम् ।

श्रीमत् अवन्तिकाचार्य्य वराहमिहिरजी कहते हैं कि यह तिथिवारसे उत्पन्न फल मैंने संक्षेपसे वर्णन किया इस ग्रंथमें सम्पूर्ण कहा गया शुभाशुभ फल बुद्धिवान् जनोंकरके यत्नपूर्वक जानना चाहिये ॥ ३८८ ॥

लक्ष्मीपुरे बरेल्यां च नारायणमुकुन्दयोः ॥
ताभ्यां ज्योतिषग्रन्थोऽयं गंगाविष्णोः समर्पितम् १॥

लखीमपुर और बांसबरेलीमें संस्कृत व भाषापुस्तकालयके स्वामी पंडित नारायणप्रसाद मुकुन्दराम तिन दोनोंने यह मयूरचित्रक नाम ज्योतिषग्रन्थ भाषाटीका सहित सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजीको समर्पण किया ॥ १ ॥

रामबाणनिधीन्द्वब्दे चैत्रे मास्यसिते दले ॥
पंचम्यां सौमवारे च भाषा संपूर्णतामगात् ॥२॥

श्रीमन्महाराजा विक्रमादित्यजीके संवत् १९५३ चैत्र कृष्णपक्ष पंचमी सौमवारको यह मयूरचित्रककी भाषा सम्पूर्ण भई ॥ २ ॥

वापेयं रचिता प्रेम्णा श्रीनारायणशर्मणा ॥
अत्र कुत्राप्यशुद्धं चेत्क्षन्तव्यं पूर्णसज्जनैः ॥३॥

यह भाषा प्रेमपूर्वक श्रीनारायणप्रसादजीने रचना

करी, इसमें कहींभी कुछ अशुद्धता हो गई हो सो पूर्ण सज्जन पंडितों करके क्षमा करनी योग्य है ॥ ३ ॥

इति श्रीमत्पण्डितनारायणप्रसादमुकुन्दरामकृतभा-
षाटीकान्वितं मयूरचित्रकं समाप्तम् ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

लक्ष्मीपुरे बरेल्यां च नारायणमुकुन्दयोः ॥
ताभ्यां ज्योतिषग्रन्थोऽयं गंगाविष्णोः समर्पितम् १॥

लखीमपुर और बांसबरेलीमें संस्कृत व भाषापुस्तकालयके स्वामी पंडित नारायणप्रसाद मुकुन्दराम तिन दोनोंने यह मयूरचित्रक नाम ज्योतिषग्रन्थ भाषाटीका सहित सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजीको समर्पण किया ॥ १ ॥

रामबाणनिधीन्द्वब्दे चैत्रे मास्यसिते दले ॥
पंचम्यां भौमवारे च भाषा संपूर्णतामगात् ॥२॥

श्रीमन्महाराजा विक्रमादित्यजीके संवत् १९५३ चैत्र कृष्णपक्ष पंचमी भौमवारको यह मयूरचित्रककी भाषा सम्पूर्ण भई ॥ २ ॥

वापेयं रचिता प्रेम्णा श्रीनारायणशर्मणा ॥
अत्र कुत्राप्यशुद्धं चेत्क्षन्तव्यं पूर्णसज्जनैः ॥३॥

यह भाषा प्रेमपूर्वक श्रीनारायणप्रसादजीने रचना

करी, इसमें कहींभी कुछ अशुद्धता हो गई हो सो पूर्ण सज्जन पंडितों करके क्षमा करनी योग्य है ॥ ३ ॥

इति श्रीमत्पण्डितनारायणप्रसादमुकुन्दरामकृतभा-
षाटीकान्वितं मयूरचित्रकं समाप्तम् ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

ज्योतिष-ग्रन्थाः ।

नाम.	की.रु.आ.
अयोध्याजातक-भाषाटीकासमेत.	.... ०-४
अर्घप्रकाश-भाषाटीकासमेत । इसमें तेजी-मन्दी वस्तु देखनेका विचार भलीभाँति लिखागया है.	... ०-६
आनन्दप्रकाश-भाषाटीकासमेत । यह ग्रन्थ ज्योतिषियोंको अतीव उपयोगी है । इसमें-रोगकी स्थिति, असाध्य-रोग किस प्रकार शान्त होगा तथा रोगमुक्ति, स्नानदानादि कितनेही उत्तम विषय लिखेगये हैं.	... ०-२
आर्यभटीय-(ज्योतिषशास्त्र) संस्कृतटीका भाषाटीकासमेत ...	... १-०
कर्णकुतूहल-सटीक तथा उदाहरणसहित । ब्रह्मपक्षीय गणित ग्रन्थ	.... ०-१२

नाम.	की.रु.आ.
करणेन्दुशेखर–इसमें रव्यादि ग्रहोंकी सारणी भलीभाँति दीगईहै । तथा सिद्धान्तोक्त सब विषय संक्षेपसे इसमें आगयेहैं. ...	... ०–४
कीर्तिपञ्चांग–संवत् १९७८ का पं० महीधरशर्माकृत । हिमालयादि देशोंमें यही पंचांग प्रचलित है	... ०–६
केरलतत्त्वप्रश्नसंग्रह–भाषाटीकासमेत । प्रश्न कहनेमें यह ग्रन्थ तात्कालिक है.	०–६
केशवीजातक–सान्वय सोदाहरण जगदीश-त्रिपाठीकृत भाषाटीकासहित । इस ग्रन्थका गणित जन्मपत्रिका बनानेमें अपूर्व है । ग्लेज	... २–०
” तथा रफ. ...	... १–१२

नाम.	की.रु.आ.
केतकीपंञ्चांग–शके १८४२ का । इस पञ्चांगका गणित बहुत ठीक है और ग्रहण इत्यादिक बराबर मिलते हैं. ...	०–२
खेटकौतुक–भापाटीकासमेत । इसमें नव्वाव खानखानेने चमत्कारिक फलादेश कहाहै.	०–६
गर्भमनोरमा–संस्कृतटीका तथा भापाटीकासहित । इसमें प्रश्नसे गर्भस्थ पुत्रकन्यादिका ज्ञान, मौष्टिकादि वस्तुज्ञान तथा द्रव्योत्पाटनादि प्रकार सुगम रीतिसे वर्णित हैं.	०–६

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना–
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " छापखाना'
कल्याण–मुंबई.